चन्दामामा
मई १९६२
50
NP

आन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय नृत्य कलाकार
कमला लक्ष्मण
की
प्रशंसा पात्र
फेशन
नमूना
इन
के लिए
रंग रंग के
सभ्यता
श्री
वेन्कटेश्वर
सिल्क साड़ियाँ
श्री वेन्कटेश्वर
सिल्क पैलेस
स्त्रियों के सुन्दर वस्त्रों के लिए
मनोहर स्थल
२८४/१ चिकपेट, बेन्गलूर-२.
फोन : ६४४०
तार : "ROOPMANDIR"

चन्दामामा

मई १९६२

अब सम्पूर्ण भारत में प्रदर्शित हो रहा है!

सौतेला भाई

कलाकार

गुरु दत्त · प्रणोति · रत्ना · राज कुमार
बिपिन गुप्ता · कन्हैयालाल · एस.एन.बेनर्जी
हनी ईरानी

संगीत अनील बिश्वास · गीत शैलेन्द्र · निर्देशन महेश कौल

मई १९६२

"भयंकर घाटी" बहुत अच्छा है। आशा है कि आप आगे भी इसी प्रकार की रोचक कथायें प्रकाशित करेंगे। "भानुमति की पिटारी" फिर से शुरु कर दें तो बहुत अच्छा होगा। अंत में यूं कहा जा सकता है कि चन्दामामा एक अनमोल पत्रिका है जो ना कि केवल बच्चों ही के लिए है। अपितु बड़ों को भी पल-भर के लिए बच्चा बना देती है। यह एक उत्तम पत्रिका है।

सुनीता मोहन, गुरदासपुर

चन्दामामा वास्तव में एक चांद है और इसके मनोहारी चित्र तो इसमें और भी खूबसूरती डाल देते हैं और कहानियाँ तो इतनी मनोरंजक कि सभी उसको पढ़ने को उत्सुक रहते हैं। "भारत का इतिहास" और "संसार के आश्चर्य" मुझे काफ़ी पसंद आते हैं। उससे हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। अंत में मैं यही कहूंगी कि चन्दामामा दिन दुगुनी, रात चौगुनी उन्नति करे मेरी यही हार्दिक अभिलाषा है।

कु. मंजु जोशी, कनखल

चन्दामामा हमारे परिवार की प्रिय पत्रिका है। मैं चन्दामामा कई वर्षों से पढ़ती आ रही हूं। इसकी भाषा अत्यन्त मधुर और सरल है। इसके चित्र बड़े ही मनमोहक होते हैं, जो बरबस ही मनको अपनी ओर आकर्षित करते हैं। चन्दामामा की कहानियाँ शिक्षाप्रद होती हैं। चन्दामामा की जितनी भी प्रशंसा की जाय, सब थोड़ी है।

इन्दिरा तलरेजा, बम्बई

साफ़ सुथरा रहने का मज़ा उन से पूछिये जो लाइफ़बॉय से
स्नान करते हैं। गर्मी और धूल-मैल की थकावट, घबराहट दूर कर के,
लाइफ़बॉय आपको बिलकुल तरोताज़ा कर देता है... और साथ ही साथ
गंदगी में छिपे कीटाणुओं को भी धो डालता है।
जी हाँ, लाइफ़बॉय से आपका सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा।

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

L. 30-X29 HI
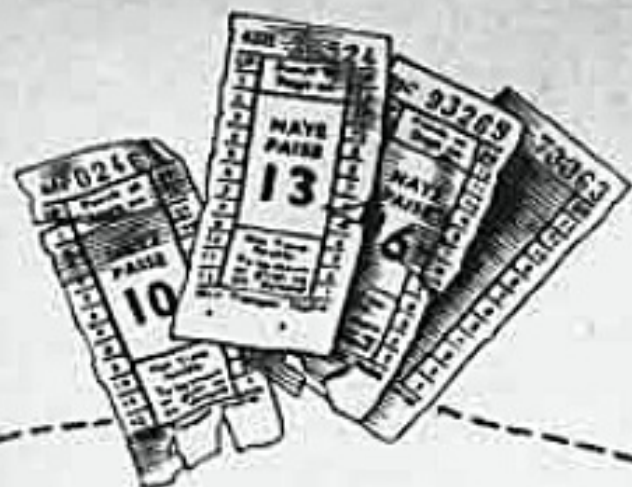
"पिछले साल मैंने अपनी **हर्क्युलिस** साइकिल पर एक हफ्ते के बस किराये से भी कम खर्च किया"

—कहते हैं कृष्णमूर्ति

नियमित रूप से साफ-सुथरा और चालू रखने के लिये साल भर में सिर्फ साढ़े तीन रुपये खर्च हुए।

आजकल की बनी साइकिलों में **हर्क्युलिस** ही सबसे बढ़िया साइकिल है। भारत के सबसे बड़े और आधुनिक मशीनों से सुसज्जित कारखाने में इसके हरेक पुर्जे निर्धारित मान के मुताबिक उत्तम रूप से बनाये जाते हैं। यही वजह है कि मामूली देखभाल और हिफाज़त से ही **हर्क्युलिस** साइकिल वर्षों तक आप की सेवा करती है।

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है,
यह तो जीवन-साथी है

प्रस्तुतकारक :
टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया
अम्बात्तूर, मद्रास के पास

चित्र
तारकाओं का
प्रिय
Remy
BORATED
TALCUM POWDER
Aykar
रेमी
पाउडर

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हमारा "प्रश्नोत्तर" स्तम्भ काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसके लिए हमारे पास प्रति मास बहुत-से प्रश्न आते हैं। परन्तु कई पाठक इसलिए असन्तुष्ट हैं कि उनके प्रश्न हमेशा पत्र में स्थान नहीं पाते। यह सम्भव है कि जो प्रश्न आप कर रहे हैं, उसका उत्तर हमने पहिले ही दे दिया हो, यह भी सम्भव है कि आपके जैसा प्रश्न किसी और पाठक ने भी किया हो। कभी कभी ऐसे प्रश्न भी मिलते हैं, जो प्रकाशन योग्य नही होते। इसलिए हम चाहेंगे कि प्रश्न भेजने से पहिले "प्रश्नोत्तर" स्तम्भ आप एक वार पढ़ लें।

वर्ष : १३ मई १९६२ अंक : ९

भारत का इतिहास

चन्द्रगुप्त का लड़का बिन्दुसार करीब २७३ ई. पू. मर गया था। उसके मरने के चार वर्ष बाद अशोक ने पाटलिपुत्र में अपना राज्याभिषेक करवाया। बिन्दुसार के बहुत से लड़के और लड़कियाँ थीं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनमें गद्दी के लिए कुछ लड़ाई झगड़ा भी हुआ। यह भी कहा जाता है कि अशोक उनमें से कई को मारकर गद्दी पर बैठा।

यह भी सम्भव है कि अशोक असली उत्तराधिकारी न था। अशोक यदि चार वर्ष बाद गद्दी पर बैठा, तो इसका कारण उनका पारस्परिक कलह ही था।

अशोक ने अपने नाम के साथ "प्रियदर्शी" और "देवानां प्रिय" की उपाधियाँ भी जोड़ लीं। अशोक के शिलालेखों में ये उपाधियाँ मिलती हैं।

शुरु शुरु में अशोक ने अपने पूर्वजों की तरह तलवार के बल पर राज्य किया। उसने कलिंग देश से भयंकर युद्ध किया और उसे मगध साम्राज्य में मिला लिया। इस विजय के बाद सिवाय तमिल देश के सारा भारत मगध साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया। अफगानिस्तान का भी बहुत-सा भाग इसमें मिला लिया गया था।

कलिंग का युद्ध केवल भारत के इतिहास में ही मुख्य घटना न थी, अपितु संसार के इतिहास में ही वह मुख्य घटना थी। इसके कारण अशोक का जीवन मार्ग ही बदल गया। कलिंग में रक्तपात को देखकर अशोक को अत्यन्त ग्लानि हुई। उसकी अन्तरात्मा जग उठी। वह पश्चाताप करने लगा। तलवार छोड़कर वह धर्म का पालन करने लगा।

उसने निश्चय कर लिया कि वह कभी अस्त्र विजय के लिए प्रयत्न नहीं करेगा, हमेशा धर्म विजय के लिए प्रयत्नशील रहेगा। इसके बाद उसकी वैदेशिक नीति में भी परिवर्तन हुआ। अशोक ने आज्ञा दी कि उसके राज्य में धर्मघोष ही सुनाई दे, राज्यघोष न सुनाई दे।

बौद्ध धर्म और बुद्ध के उपदेशों ने अशोक को आकर्षित किया। वह उनका श्रद्धापूर्वक अध्ययन व आचरण करने लगा। बौद्ध गया और कपिलवस्तु की उसने यात्रा भी की। उसने अपने सारे राज्य में धर्मयात्रा की, मामूली जनता को उसने धर्मोपदेश भी किया।

वह एक बार २५६ दिन तक देशयात्रा करता रहा। उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उसके राज्य में और पास के जम्बूद्वीप के प्रान्त में लोग पहिले की अपेक्षा देवत्व के अधिक समीप थे। उसमें आध्यात्मिक चेतना थी।

धर्म की स्थापना और उसकी व्याप्ति के लिए अशोक ने जो प्रयत्न किया वह वर्णनातीत है। इसके लिए उसने पृथक कर्मचारी नियुक्त किये। देश भर में उसने शिलालेख लगवाये। धर्म स्तम्भ बनवाये। "धर्म महामन्त्री" के पद पर उच्च कर्मचारियों को नियुक्त किया।

राज्य में अराजकता पैदा करनेवाली कई जंगली जातियाँ थीं। उनका हिंसापूर्वक दमन करना अशोक ने छोड़ दिया। उसने अपने लड़कों को भी नैतिक विजय के महत्व के बारे में उपदेश दिया। धर्म के प्रचार में उनकी कारुवाही आदि मन्त्रियों ने भी मदद की।

बौद्ध धर्म का और देशों में प्रचार करने के लिए अशोक ने उपदेशक भेजे। इस

तरह बौद्ध धर्म लंका, बर्मा और सुमात्रा आदि देशों में गया। यवन देशों में भी अशोक ने प्रचारक भेजे पर बौद्ध धर्म का वहाँ उतना प्रचार नहीं हुआ।

अशोक ने और चीज़ों के साथ बौद्ध धर्म को लिखवाया। उसने बौद्ध संघों के निर्वहण के लिए आवश्यक व्यवस्था की।

अशोक की विशेषता यह थी कि यद्यपि वह स्वयं बौद्ध धर्मावलम्बी था, तो भी उसे और धर्मों से द्वेष न था। उसने औरों को भी यह न करने दिया। हिन्दू, जैन, व अन्य धर्मावलम्बी अपने धर्म का स्वतन्त्रता पूर्वक उसके राज्य में प्रचार कर सकते थे।

अशोक ने जिसका उपदेश दिया, उसका पालन भी किया। जन्तु बध को मना करवा दिया। बलियों को निषिद्ध कर दिया। मनुष्यों के साथ पशुओं की चिकित्सा का भी प्रबन्ध किया। यात्रियों के सुविधार्थ, मार्ग में उसने बड़े बड़े पेड़ लगवाये।

अशोक की एक और विशेषता यह है कि उसने जो भवन बनवाये वे भी अपूर्व थे। आलय, विहार, स्मारक स्तूप, आदि उसने कितनी ही चीज़ें बनवाईं। उसने जनता को एकता, सहनशक्ति और अहिंसा का उपदेश दिया। उसके प्रयत्न से वह धर्म, जिसके अनुयायियों की संख्या सीमित थी, सारे संसार में व्याप्त हो गया। भारत के इतिहास में अशोक-सा राजा नहीं हुआ।

अशोक ने ३६ या ३७ वर्ष राज्य किया। २३२ ई. पू. में वह मर गया। उसके साथ मगध साम्राज्य का वैभव भी लुप्त-सा हो गया।

पार्वती परिणय

चतुर्थ अध्याय

पधारे ऋतुराज लिए रति-मदन को
हुआ शिव-तपोवन निलय शृंगार का
पेड़-पौधे जो भी दीखे ऋतुराज को
जीर्ण-शीर्ण पत्ते भी हुए सकोमल कोंपले

खिलीं कलियाँ कर रही मन को मुग्ध
हरे कोंपले दीख रहे अति शोभायमान
लटक रहे पेड़ों में वे सुन्दर गोल फल
दीख रहा वन मनोहर औ' लुभावना

डालियों पर हैं आसीन कोकिल, तोते
मृदु-मधुर स्वर में गुँजा रहे वन-प्रांत को
मलय मारुत की शीतल बयार से
कौन है वह शरीर जो न हो पुलकित

फूलों की है सज्जा मनोहर
दीखते वे उल्लसित, मुदित
अलंकृत हैं पेड़ इन फल-फूलों से
फूट रहीं उमंगें आनंद की उनसे

लताएँ फैलीं पेड़-पौधों पर
विलसिते सुन्दर मंडप हर कहीं
छाया करतीं तन-तप को दूर
रति-पति को पहुँचातीं विश्राम अति

शिलाओं पर, अवनि पर हर कहीं
पराग था पड़ा हुआ ढेर का ढेर
कँटीली झाड़ियाँ भी छिप गयीं
पराग के ढेर की इस आड़ में

अधखुली आँखोंवाली हरिणी के
निकट ही था खड़ा बारहसिंगा इक
प्रेमोन्मत्त हो वह छूता बारंबार
अपनी सींगों से उसके तन को

हँस-हँसिनी झूमते मस्ती में
हर्षातिरेक वे लखते परस्पर
हँस भर रहा हँसनी का मुँह
फूल के अति मधुर मधु से

पुरुष चूम रहा इक भामा को
जो थकी अति ही खेल-कूद में
दोनों थे अब तक मग्न संलाप में
संलाप बना बहाना चूमने का

तपस्वी लीन जो तपस्या में
देख तरुणी को कह 'शिव' 'शिव'
खोल आँखें, विस्मरित अपने को
चले पीछे-पीछे इक तरुणी के

शिव-तपोवन बना यों
शिविर ऋतुराज वसंत का
देख वसंत को कार्य-सफल
मदन ने की भरपूर प्रशंसा

कामदेव ने ठहराया रति को
रम्य इक पुष्प-वाटिका में
ईख का धनुष, पुष्प-बाण
लिए पहुँचे निकट शिव के

शिव हैं आसीन शिला पर
मींच आँखें इक व्याघ्रछाल पर
दीख रहा शांत रस है सम्मुख
साकार रूप धारण किये

जटाएँ हैं बँधी हुई ऊपर को
ईश हैं लीन जप-तप में
ज्यों वैराग्य सारा जमा है
तपस्या की इस शिला पर

ईश हैं निश्चल समुद्र-से
जिसमें न हैं लहरें, जो है मौन
देख शिव की इस भंगिमा को
मदन सिहर उठे, गिरा धनुष कर से

दिल को कर कड़ा, बन कठोर
मदन ने किया भर इशारा
तोते, मैनों की आवाज़ से
गूँजा लता-मंडप शिव का

नंदीश्वर ने सुन ध्वनि यह
तर्जनी रखी नाक पर
बस, फैल गयी स्तब्धता
छिपे पक्षी-गण जहाँ कहीं

पुष्प-बाणधारी मदन चला
गुज़रते हुए झुरमुटों से

आम्र-वृक्ष था शिव के समीप ही
छिपा शीतल छाया में उसी की

गिरि-पुत्री चली उधर ही से
शिव की पूजा करने ले पुष्प अनेक
वदन पर हँसी थी झलक रही
डग भरती प्राणवान लता-सी

आज्ञा पा नंदकेश की
सुन्दरता की यह सजीव प्रतिमा
नगतनुजा पहुँची शिव के पास
मदन हैं प्रतीक्षा में अवसर इसी की

चढ़ा बाण को डोरी पर
फेंका उन्मादास्त्र पार्वती पर
प्रेम हृदय का उमड़ पड़ा शीघ्र ही
जो था लक्षित उमा के गालों पर

लजाती, सकुचाती पार्वती ने
रखे पुष्प शिव के पदों पर
किया नमस्कार झुक उनके पगों पर
हृदय है भरा प्रेम-भावना से

शिव ने खोली आँखें इस स्पर्श से
'हों तुम्हें प्राप्त पति अद्भुत-अनुपम'
पा आशीर्वाद महेश का, झुका शीश
मुस्कायी उमा मन ही मन

मदन भी हुए प्रसन्न देख यह दृश्य
पा अपने मोहनास्त्र को सफल कार्य में
तैयार अब मौक़े की ताक में
छोड़ूँ दिव्यास्त्र यह कब शिव पर

पार्वती ने समर्पित किया
पुष्पों की इस वरमाला को
शिव ने स्वीकारा उसे आदर से
स्मित की रेखाएँ फूटीं उनके वदन पर

रतिदेव ने पा यह मौका दुर्लभ
कर एकत्रित अपना सारा बल
छोड़ा इक बाण शिव पर
जिस के प्रभाव का न था आर-पार

शिव ने देखा उमा के मुखारविंद को
शरमा के झुकाया उमा ने शीश को
पूनम के दिन समुद्र है उमड़ पड़ता ज्यों
महेश का भी मन है उमड़ पड़ा त्यों

शिव की आँखों को लगी पार्वती
उज्वल, ज्योतिर्मान, अनुपम, अद्वितीय
पार्वती का शरीर भरा पुलक से
लड़खड़ाती उठी अपने स्थल से

हरि की आँखें थीं गड़ गयीं
फँस गयीं उमा के सौंदर्य-जाल में
हैमवती की हुई आँखें अति चंचल
वे मग्न थीं शिव के दर्शन में

मदन ने फेंक धनुष-बाण को
देख सफल अपने मनोरथ को
निहारता रहा अपलक बदलते
पार्वती-परमेश्वर की भावनाओं को

शिव रह गये चकित
अपनी ही इन चेष्टाओं पर
फैलायी दृष्टि चारों ओर
पाया मदन को आम्र-वृक्ष के पास

'अच्छा! यह कार्य है मदन का'
क्रुद्ध हो अति खोली आँख तीसरी
मदन हुए भस्म देखते ही देखते
यह दृश्य था कितना भीषण, भव्य

देवता दौड़े आये चिल्लाते,
अभय की भिक्षा माँगते
शिव छोड़ चुके स्थल यह तब तक
हैमवती हुई विभ्रांत देख इस दृश्य को

अधीर हो रति पहुँची वहाँ
अपने पति को न पा वहाँ
पा केवल उनका भस्म मात्र
हुई मूर्छित, गिरी धरा पर

उमा भी हुई मूर्छित
अप्रत्याशित इस घटना से
हिमवंत पहुँचे वहाँ तभी
चले ले मूर्छित उमा को

[१०]

[गुप्त मार्ग जब धुँये से भर गया, तो ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक बाहर गया। उसने अपने शिष्यों को डराकर भाग निकलने की सोची। पर वह भाग न सका। वह बाहर आया ही था कि राजगुरु द्वारा पकड़ लिया गया। राजगुरु ने आज्ञा दी कि उसे बाँस से लटकाकर शहर ले जाया जाय। इसके बाद—]

सेनापति के भेजे हुए सैनिक ने नगर में कुछ ढोल पीटनेवालों को इकट्ठा किया और उसने ढोल पिटवाना शुरु किया। शहर भर में ढोल पिटवाया।

यह सुन सबको खुशी हुई कि जो मान्त्रिक जंगलों में रहकर ब्रह्मपुर के नागरिकों को तंग कर रहा था, वह पकड़ा गया था।

यह घोषणा सुनते ही लोगों के झुन्ड जमा हो गये और उत्सव मनाने लगे। बहुत से लोग ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक को देखने नगर के द्वार पर गये।

द्वार से पहिले पहल राजगुरु आया। लोगों ने पहिले ही जान लिया था कि उसके शक्ति सामर्थ्य के कारण ही मान्त्रिक पकड़ा गया था। इसलिए उसका उन्होंने खूब स्वागत किया। सबने उसका जय जयकार किया। थोड़ी देर बाद सेनापति फिर उसके बाद सैनिक बाँस

पर मान्त्रिक को ढोकर नगर के द्वार के समीप आये।

मान्त्रिक को उन स्थिति में देखकर लोग हँस हँस कर शोर करने लगे। कई ने मान्त्रिक की चोटी पकड़कर इधर उधर हिलायी। कुछ उसे कोसने पीटने गये।

सेनापति ने उन्हें रोकते हुए कहा—"मान्त्रिक को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। यह महाराजा की आज्ञा है। यह एक ऐसा रहस्य जानता है जिससे हमारा राज्य सम्पन्न हो सकेगा। लोग सोने और चान्दी से तोले जा सकेंगे!"

त्रासदण्डी मान्त्रिक लोगों का शोर, फटकारें सुनकर अपमान और भय से काँपने लगा।

त्रासदण्डी तो इस आशा में था कि भयंकर घाटी में मिलनेवाली श्री-सम्पदा से राज्य जीत सकेगा। अब वह अपनी इस दयनीय स्थिति पर आँसू बहा रहा था।

उसने चारों ओर घेरे हुए लोगों से, जो गलियाँ दे रहे थे, कहा—"भाइयो, मुझे क्षमा करो। मैंने बहुत-सी गलतियाँ की हैं। मगर जिसने जंगल में तरह तरह के जानवरों का रूप धारण किया और लोगों को सताया और सेनापति को मारा वह मेरा शिष्य गधा जयमल है, मैं नहीं हूँ। अगर हो सके तो उसको पकड़ो और उस गड़रिये केशव को भी।"

त्रासदण्डी मान्त्रिक की बातें सुनकर लोगों ने सैनिकों से जयमल और केशव के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि वे दोनों कहीं पहाड़ों में छुप गये थे। यह सुनते ही कुछ युवक, लाठी भाले लेकर नगर के द्वार पार करके जंगल की ओर निकल पड़े।

केशव, उसका बूढ़ा पिता और जयमल, पहाड़ों में हाथियों की घाटी के पार के जंगल में गये।

केशव को, जो पेड़ पौधों के पीछे से ब्रह्मापुर नगर की ओर देख रहा था कुछ आदमी जंगल की पगडंडियों से आते हुए दिखाई दिये और ब्रह्मापुर के सैनिक जिन्होंने सारा जंगल उनके लिए छान डाला था, सिर नीचा करके नगर की ओर जा रहे थे।

नगर से आते हुए लोगों के हाथों में लाठी और भाले देखकर केशव ने अनुमान कर लिया कि उनसे उसको आपत्ति आनेवाली थी। वह तुरत पेड़ पर से उतरा और आनेवाली आपत्ति के बारे में अपने पिता और जयमल से उसने कहा।

जयमल और बूढ़े ने भी पेड़ पर चढ़कर देखा। उन्हें भी नगर से आते हुए युवक दिखाई दिये।

वे दोनों पेड़ पर से उतर आये। जयमल ने केशव से कहा—"सैनिकों की अपेक्षा ये लोग और खतरनाक हैं। वे सैकड़ों की संख्या में आ रहे हैं। वे सारे पहाड़ और जंगल को यदि घेरना चाहें तो घेर सकते हैं। अगर उन लोगों ने यह किया, तो जंगल के अन्दर के हिस्से में भी भागने के लिए हमारे पास अधिक समय नहीं है।"

केशव और बूढ़े को भी ऐसा ही लग रहा था। यदि वे ब्रह्मापुर के लोगों के हाथ आ गये, तो उन्हें तरह तरह के कष्ट भोगने होंगे।

ब्रह्मदण्डी, जो सैनिकों द्वारा पकड़ लिया गया था, उनसे बदला लेने की कोशिश कर रहा था। बूढ़े को यकायक एक

उपाय सूझा। उसने केशव और जयमल्ल से इस प्रकार कहा :—

"मुझे बेलों से बाँधकर, मेरे हाथ पैर बाँधकर उस पत्थर पर छोड़ दो। तुम जंगल के अन्दर दूर चले जाओ। जो हमारे लिए आ रहे हैं, मैं तुमको उनके हाथ न पड़ने दूँगा।"

केशव इसके लिए न माना। जयमल्ल ने भी एतराज किया। राजगुरु ने क्योंकि बूढ़े को पहिले देख रखा था, इसलिए यह कहकर कि उसने ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक के शिष्यों को भागने का मौका दिया था, वह उसे सज़ा दे सकता था। परन्तु बूढ़े ने हठ किया। उसने कहा—"सब के पकड़ जाने की अपेक्षा यह अच्छा था कि कम से कम दो तो बच निकलें।"

"मैं कहूँगा कि तुम दोनों मुझे बाँधकर यहाँ छोड़कर, भाग गये हो। मैं बूढ़ा हूँ। क्यों नहीं मेरी बातों का विश्वास करेंगे?" केशव के पिता ने पूछा।

जयमल्ल ने आखिर उसको जंगली बेलों से बाँध दिया। एक ऊँचे पत्थर पर उसे लिटा दिया।

केशव ने कहा कि जब वे लोग चले जायेंगे, तो वे तुरत आकर फिर उसे ले जायेंगे। वे जंगल के अन्दर जल्दी जल्दी भागने लगे।

थोड़ी देर बाद ब्रह्मपुर के वासियों का पहाड़ों और जंगलों में से शोर मचाते हुए आना सुनाई दिया। वह भी ज़ोर से चिल्लाया, "बचाओ, बचाओ।"

यह सुनते ही ब्रह्मपुर के लोग लाठी लेकर भागे-भागे आये। बूढ़े को देखकर उन्हें अचरज हुआ। "मुझे खोल दीजिये। मैं जानता हूँ कि आप लोग मान्त्रिक के शिष्यों के लिए पहाड़ और घाटी घाटी

देख रहे हैं। उन्होंने ही मेरी यह हालत की है।" बूढ़े ने कहा।

तुरत चार पाँच युवक बूढ़े के बन्धन खोलने लगे। कई ने पूछा—"वे किस तरफ़ गये हैं, जंगल में छुप गये हैं क्या! कहाँ भागे हैं?"

"वे बड़े चालाक हैं बहुत चलते पुर्जे हैं। यह देख कि आप उन लोगों को खोज रहे हैं, वे भिखारी के भेस में ब्रह्मपुर की ओर भाग गये हैं।" बूढ़े ने कहा।

उन सबने अचरज में नाकों पर अंगुली रखी। उनमें से एक ने जो अपने को बड़ा अक़्लमन्द समझता था, कहा—"वे वहीं गये हैं, जहाँ हम उनको नहीं खोजेंगे। जो कोई गद्दार करार दिये जाते हैं, वे शहर छोड़कर जंगलों में भागते हैं। ये जंगल छोड़कर शहरों में भाग गये हैं। इसलिए ही वे हमारे सैनिकों को नहीं मिले। बड़े चलते हुए मालूम होते हैं ये।"

इस तरह बूढ़े की बातों में सब को विश्वास हो गया। तुरत वे झुन्ड बनाकर चारों ओर भागने लगे। "मान्त्रिक के शिष्य भिखारी के भेस में शहर की ओर भाग गये हैं, हो।" वे चिल्लाने लगे। तुरत लोग नगर के सब भिखारियों को पकड़ने के लिए भागने लगे।

उन लोगों ने, जो ब्राह्मदण्डी के शिष्यों को पकड़कर लाने के लिए गये थे, शहर में आकर देखा कि ब्राह्मदण्डी हाथ बाँधकर राजा के सामने खड़ा खड़ा गिड़गिड़ा रहा था। प्रार्थना कर रहा था कि उसको प्राण भिक्षा दी जाये।

राजा, राजगुरु, मन्त्री और सेनापति मान्त्रिक से पूछ तलब करके भयंकर घाटी के रहस्यों के बारे में जानने का प्रयत्न कर

रहे थे। पर मान्त्रिक जिद् कर रहा था कि जब तक उसके प्राणों की रक्षा का अभय दान न दिया गया, तब तक वह कुछ न बतायेगा।

"तुम अपनी जान के बारे में न डरो, राजा की तरफ़ से मैं तुम्हें अभय दान देता हूँ।" कहते हुए राजगुरु ने राजा की ओर देखा। राजा ने स्वीकृति की सूचना देते हुए सिर हिलाया।

"क्या तुम्हारा यह कहना सत्य है कि भयंकर घाटी में अतुल धनराशि है। यदि यह सच है तो इसके लिए क्या प्रमाण हैं?" राजगुरु ने मान्त्रिक से पूछा—

"आदरणीय राजगुरु, उपासकों के आराध्य, उन्मत्त भैरव को प्रत्यक्ष कहता मैंने इन कानों से सुना है। इससे अधिक और किसी प्रमाण की क्या आवश्यकता है?" ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने कहा।

"क्या इन बातों पर विश्वास किया जा सकता है?" राजगुरु ने पूछा।

"भैरव, भैरव पाप नाश करो।" मान्त्रिक ने दोनों कान बन्द करके कहा— "बीस वर्षों से उस भैरवेन्द्र का साक्षात्कार के लिए मैंने उपासना की। आखिर मैंने उस भयंकर घाटी में जाने के लिए जिस व्यक्ति की जरूरत थी, उसे भी पकड़ा। यदि आपको मेरी बातों में विश्वास नहीं है, तो कालभैरव ही मेरी शरण है।" भक्ति के आवेश में वह आगे गिर गया।

"गुरुजी, यह दुष्ट ही सही पर बड़ा भक्त मालूम होता है।" राजा ने आश्चर्य व्यक्त किया।

इतने में द्वार के पास शोर सुनाई देने लगा। सेनापति वहाँ गया। दो सैनिक उनके सामने हाँफते हाँफते आकर खड़े हुए। उनको देखते ही राजा ने ईशारा
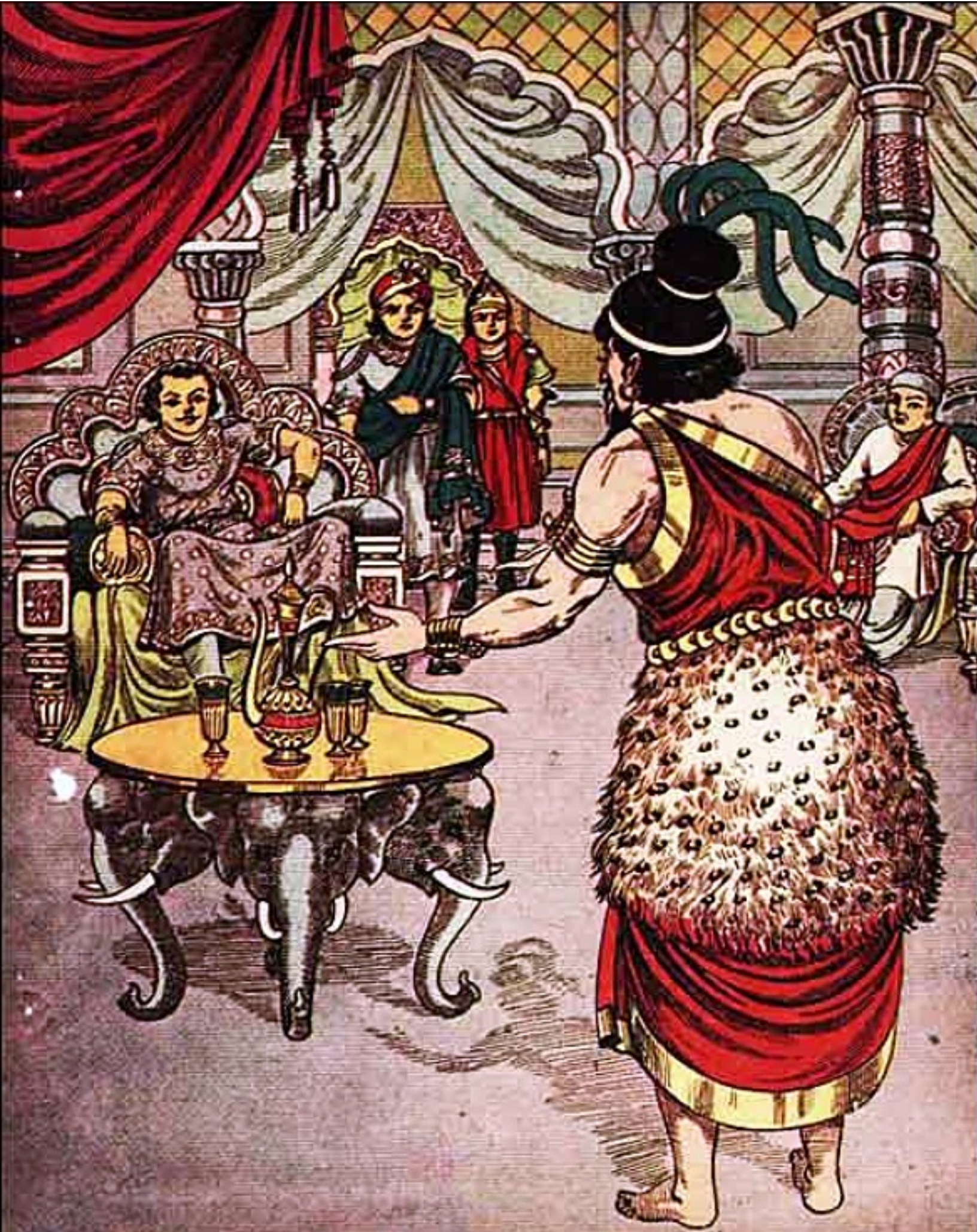
करके कहा—"आओ, अन्दर आओ, क्या बात है!"

"नगर के युवक भिखारियों को पकड़ कर, "क्या तुम मान्त्रिक के शिष्य हो, "सच बताओ" पीट-पीटकर यह पूछ रहे हैं। जब हम उन्हें बचाने गये। तो उन्होंने हमें भी मारा।" सैनिक ने कहा।

"क्या बात है!" राजा ने सेनापति की ओर देखा।

"ब्राह्मदण्डी के दोनों शिष्य भिखारी का भेस बदलकर नगर में घूम रहे हैं, ऐसी एक अफवाह उड़ी है। इस अफवाह में कितनी सचाई है, हमें नहीं मालूम है।" सेनापति ने कहा।

राजगुरु ने नीचे गिरे हुए मान्त्रिक को लात मारकर कहा—"उठो, उठो, ब्राह्मदण्डी, सुनी तुमने यह अफवाह! क्या तुम भिखारी के भेस में अपने शिष्यों को पहिचान सकोगे!"

ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक यह सुनकर तुरत खड़ा हुआ।

उसने कहा—"सुनो प्रभु, मैं उन्हें भिखारी के ही भेस में नहीं, महाराजा के भेस में भी उन्हें पहिचान लूँगा।" तब तक मन्त्री चुप बैठा था, पर यह सुनते ही उसने कहा—"तो महाराज शहर के सब भिखारियों को क्या यहाँ पकड़कर लाऊँ!"

राजा ने स्वीकृति की सूचना सिर हिलाकर दी, मन्त्री और सेनापति कमरे से बाहर गये। उनकी आज्ञा होते ही सैनिक भिखारियों को पकड़ने के लिए नगर के सब गलियों में निकल पड़े। (अभी है)

भूतों का किया हुआ विवाह

[२]

भूत ने हसन को राजमहल के पास, एक चबूतरे पर लिटा दिया, फिर उसको उठाया। पहिले तो हसन को सारा का सारा एक सपना-सा लगा। वह अपने पिता के मकबरे में तो था ही नहीं, उसके चारों ओर का नगर बसरा भी न था। वह आश्चर्य से चिल्लानेवाला ही था, एक लम्बा-सा दाढ़ीवाला आदमी सामने प्रत्यक्ष हुआ और उसने उसको वैसा करने से रोका।

उस आदमी ने यह कहा—"मैं एक अच्छा भूत हूँ। तुम्हारे सौन्दर्य के अनुरूप तुम्हें पत्नी देने के लिए हम तुम्हें कैरो नगर लाये हैं। जो मैं कहूँ, उसे ध्यान से सुनो और उसे करो। तुरत स्नानशाला जाओ। उसमें से एक कुबड़ा दूल्हा आयेगा। उसके साथ बहुत से लोग होंगे। गाने, नाचनेवाले होंगे। तुम भी उनमें शामिल हो जाओ। उनकी तरह तुम भी एक मोमबत्ती पकड़ लो। यह लो मोमबत्ती। जब दूल्हा, दुल्हिन के घर जाये, तो तुम भी उनके साथ साथ जाओ। जब नाचने गानेवाले दूल्हे को झुक झुककर सलाम करें, तो इस थैले में हाथ डालकर सोना बिखेरो। यह थैली ले लो। तुम्हें इस बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि इस थैली का सोना खतम हो जायेगा। चाहे तुम इसमें से जितना ले लो, पर इसमें तब भी सोना रहेगा। इस तरह तुम उस झुन्ड के लोगों को अपने साथ कर सकोगे। फिर जब

भवानी प्रसाद

दूल्हे के साथ चलने लगा। उस भीड़ में कोई ऐसा न था, जिसने उसके सौन्दर्य को देखकर आश्चर्य न किया हो। उसने जो पोषाक पहिन रखी थी, वह दूल्हे की पोषाक से अधिक कीमती थी।

जब जलूस में नाचने, गानेवाले सामने आकर दूल्हे को सलाम करते, तो वह मुट्ठी-भर भरकर उनको सोना देता। भूत की दी हुई थैली सचमुच खाली न हुई। उसमें से उसने बहुत-सा सोना निकाला, पर वह भरी ही रही।

जब जलूस दुल्हिन के घर पहुँचा, तो उनमें कोई ऐसा न था, जो उसको खुदा न समझ रहा हो। वहाँ नौकरों ने स्त्रियों और दूल्हे के सिवाय किसी को अन्दर न जाने दिया। उन्हें दरवाज़े के पास ही रोक दिया।

विवाह के घर में सब चले जायें, तो तुम कुबड़े के साथ ही रहना। कहीं न जाना।"

यह कहकर वह व्यक्ति कहीं चला गया, हसन को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी उसने जो कुछ भूत ने कहा था, वह करने का निश्चय किया। मोमबत्ती लेकर वह स्नानशाला में गया। वहाँ बहुत से लोग थे और सब के पास मोमबत्तियाँ थीं।

कुबड़ा दूल्हा जब स्नानशाला से निकला, तो नाचने, गानेवालों के साथ जलूस शुरु हुआ। हसन भीड़ में से होता हुआ

परन्तु नाचने और गानेवाली स्त्रियों ने हठ किया कि हसन को अन्दर जाने दिया जाय। उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि अगर उसे अन्दर न आने दिया गया, तो न वे गायेंगी, न नाचेंगी ही। जब वे हसन को पकड़कर अन्दर खींच ले गईं, तो पहरेदार कुछ भी न कर सके।

अन्दर औरतें काफ़ी देर तक गप्पें मारती रहीं। बड़े-बड़े अमीरों की पत्नियाँ वहाँ थीं। दुल्हिन ने दूल्हे के साथ किसी और एक सुन्दर लड़के को देखा। पर वह यह न जान सकी कि वह कौन था और वहाँ क्यों था।

जब मनोरंजन हो गया, तो औरतें दुल्हिन को शयन कक्ष में छोड़कर अपने काम पर चली गईं। जिस हाल में मनोरंजन का कार्यक्रम हुआ था, उसमें कुबड़ा दूल्हा और हसन ही रह गये थे।

"तुम भी चले जाओ। क्यों तुम मेरे साथ हो?" कुबड़े दूल्हे ने हसन से पूछा।

यह सुनते ही हसन उठकर बाहर जाने लगा। दरवाज़े के पास उसे भूत दिखाई दिया—"इधर कहाँ जा रहे हो? तुम्हारा रास्ता उस तरफ़ है।" कहकर वह कुबड़े को उठाकर कहीं चला गया।

कुबड़े ने जब आँखें खोलीं, तो वह एक अन्धेरी कोठरी में था। उसने उसमें से निकलने की बहुत कोशिश की। पर वह निकल न सका।

इस बीच हसन उस तरफ़ गया, जिस ओर भूत ने जाने के लिए कहा था, दुल्हिन के कमरे के पास जाकर हिचकिचाने लगा। भूत ने फिर प्रत्यक्ष होकर कहा—"अन्दर जाओ, जाकर दुल्हिन से कहो कि तुम ही दूल्हे हो, उसके पिता ने उसकी परीक्षा करने के लिए ही इतना सब नाटक खेला था, वह तुम्हारी बात का विश्वास करेगी।"

दुल्हिन सिर नीचा करके एक कोने में बैठी थी। हसन के कदमों की आहट सुन उसने अपना मुँह एक तरफ़ फेर लिया और कहा—"छी, छी, मेरे पास न आ.... तुम्हें देखकर तो हमें उल्टी आती है।"

"क्या मैं उतना बदसूरत हूँ!" हसन ने कहा। उसने सिर उठाया, तो चकित रह गई। "आप कौन हैं, दूल्हा तो कुबड़ा था न?"

"वह सब तो नाटक था, जो तुम्हारे पिता ने तुम्हारी परीक्षा करने के लिए रचा था।" हसन ने कहा।

सित्तल ने हसन का विश्वास कर लिया। उसका दुख जाता रहा। न जाने खुशी कहाँ से उमड़ आई। उन्होंने वह रात मज़े में काटी। सवेरा होनेवाला था कि भूतनी ने भूत से मिलकर कहा—"अभी यहीं हो! उस लड़के को अपनी जगह छोड़ना है न?"

भूत ने शयन कक्ष में प्रवेश किया। हसन को, जो गाढ निद्रा में था, पीठ पर लादकर बसरा की ओर वह निकल पड़ा। पर उसके बसरा पहुँचने से पहिले ही सूर्योदय हो गया। इसलिए हसन को डमास्कस के बाहर छोड़कर वह अपने रास्ते चला गया।

हसन जब सोकर उठा, तो न दुल्हिन थी, न शयन कक्ष ही और तो और मकान भी न था। उसे ऐसा लगा कि वह किसी

नगर के बाहर था, पर उसे यह न मालूम था कि वह नगर क्या था। वह न कैरो था, न बसरा ही।

हसन के चारों ओर लोग जमा होकर उसे आश्चर्य से देख रहे थे। उसे देखकर यह न लगता था कि वह कहाँ से सफर करके आया था। उसके शरीर पर कुछ ही कपड़े थे।

"यह कौन-सा शहर है? कौन-सा देश है?" हसन ने लोगों से पूछा।

"यह सीरिया देश है और डमास्कस नगर है।" लोगों ने कहा।

"रात-भर मैं कैरो में था, फिर सवेरा होते ही डमास्कस में कैसे आ गया?" हसन ने आश्चर्य में पूछा।

"क्या आप कैरो के हैं?" लोगों ने पूछा।

"नहीं, मैं बसरा का हूँ। कल रात अन्धेरा होने के बाद बसरा में सो गया था। मगर तीसरे पहर मैं कैरो में उठा। कैरो में जो सोया, तो डमास्कस में आज उठ रहा हूँ। यह सब इन भूतों की ही करतूत होगी।" हसन गुनगुनाने लगा।

उसकी बातें सुनकर लोगों ने सोचा कि वह कोई पियकड़ होगा, नहीं तो पागल।

हसन को अपनी वस्तुओं की गठरी याद आई। वह अपने कपड़े, हज़ार दीनारों की थैली और पगड़ी के लिए इधर उधर खोजने लगा। पर वे सब तो कैरो में ही छूट गये थे।

लोगों का सन्देह पक्का हो गया कि वह कोई पगला था। उनको पीछे आता देख, हसन नगर में गया, गलियों में भागने लगा। फिर एक मिठाई की दुकान में घुसकर अन्दर छुप गया।

यह दुकान अब्दुल्ला की थी। उसको हसन पर तरस आई। उससे पूछकर उसने उसकी कहानी मालूम कर ली। "बेटा, मुझे तो तुम्हारी बातों पर विश्वास है, पर किसी से यह न कहना। मेरे बच्चे नहीं हैं। जब तक तुम्हारे कष्ट दूर न हो जायें, तब तक तुम मेरे घर ही रहो। यह दुकान अपनी ही समझो। मैं तुम्हें गोद ले लूँगा।"

"आपकी जैसी मर्ज़ी" हसन ने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

अब्दुल्ला हसन के लिए बाज़ार से अच्छे कपड़े लाया, काज़ी के समक्ष उसने उसको गोदी ले लिया।

* * *

सित्तल और हसन के विवाह के अगले दिन सवेरे उसका पिता वज़ीर शम्स, भारी दिल के साथ, उसकी लड़की का जो अपमानजनक विवाह हुआ था, उसके बारे में सोचता, लड़की के पास आया। वह उससे पहिले ही नीन्द से उठ चुकी थी। जब उसने अपने पति को न देखा, तो यह सोच कि कहीं बाहर गया होगा, वह उसकी प्रतीक्षा करने लगी।

जब शम्स ने देखा कि उसकी लड़की के मुँह पर न नाखुशी थी, न दुख ही और वह आनन्द से चमचमा रही थी, तो उसको अपनी ही आँखों पर विश्वास न हुआ। "क्या बेटी तुम्हें यह शादी भायी बेटी!" उसने पूछा।

"क्यों नहीं भायेगी!" लड़की ने आश्चर्य में पूछा।

"तो क्या तुम्हें तुम्हारा कुबड़ा पति सचमुच भाया!" पिता ने पूछा॥

लड़की ने मुस्कराकर कहा—"क्यों, अब भी नाटक कर रहे हो पिताजी, मैं सब जान गई हूँ।"

शम्स न ताड़ सका कि लड़की क्या कह रही थी। पर पूछताछ करने पर एक बात तो मालूम हुई। वह यह कि उसने पिछली रात कुबड़े के साथ नहीं बितायी थी। कुबड़े के लिए जब खोज की गई, तो वह अन्धेरी कोठरी में पाया गया।

"अरे क्यों, तुम पिछली रात मेरी लड़की के साथ नहीं थे!" शम्स ने उस से पूछा।

"आपकी लड़की मानों जैसे मुझे दे दी गई हो, यह सबको दिखाया गया और मुझे अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया और ताला लगा दिया गया। आपको और आपकी लड़की को एक सलाम।" कहता कुबड़ा चला गया।

शम्स जान गया कि सुल्तान ने कुछ सोचा और ख़ुदा ने कुछ और किया। उसने अपनी लड़की के कमरे के पास आकर पूछा—"जिसने तुमसे वाक़ई शादी की थी, वह है कहाँ! उसका नाम क्या है! उसका शहर कहाँ है!"

"जब वे वापिस आ जायें, तो उनसे ही सब कुछ पूछ लेना।" सितल हसन ने कहा। उसने अपने पिता को हसन की पोषाक, पगड़ी और सोने की थैली दिखाई।

कई दिन प्रतीक्षा की, सारा कैरो नगर छान डाला, पर शम्स का कहीं पता न लगा। वह आदमी न जाने कहाँ गुम था। आखिर जब कुछ करने को न रहा, तो शम्स अपने दामाद के कपड़े बार बार टटोलने लगा। उसको उसकी पगड़ी में एक कागज़ दिखाई दिया। उसे देख, पढ़कर, शम्स खुदा के करनामे पर चकित रह गया। उसका दामाद और कोई न था। नूर का लड़का ही था। जब पिछली बार वे मिले थे और उनमें जो बातचीत हुई थी, वह ठीक निकली।

परन्तु नूर का लड़का हसन कहाँ था, इसका पता नहीं लग रहा था, वह कभी न कभी तो दिखाई देगा, तो उसकी परीक्षा लूँगा और जान लूँगा कि सित्तल ने हसन के साथ रात बितायी थी कि नहीं। इसलिए शम्स ने अपनी लड़की के कमरे में, जो जो चीज़ें, जहाँ जहाँ थीं, उन सब के बारे में लिख लिया और दामाद के आने की इन्तज़ार करने लगा।

समय बीतता गया, सित्तल गर्भवती हुई और नौ महीने बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया, उसका अजीब नाम रखा

गया। मां, बाप की तरह वह भी बड़ा सुन्दर था।

अजीब जब सात साल का हुआ, तो मदरसे में जाने लगा। वह और बच्चों को नीचा देखा करता। वह उन्हें पीटता मारता। "जानते हो तुम कौन हो? मेरे पिता वज़ीर हैं।" वह शेखियाँ मारा करता।

और बच्चे अजीब का यों सताना कुछ दिन तो सहते रहे, आखिर जाकर उन्होंने गुरु से शिकायत की।

गुरु ने उनसे कहा—"अगर जो मैं कहूँ, तुमने किया, तो अजीब तुम्हें कभी तंग न करेगा। खेल के समय तुम में से एक कहना—"मुझे एक बड़ा अच्छा खेल आता है, पर खेल में आने से पहिले हरेक को अपने पिता और माता का नाम बताना होगा। जो यह न बता सकेगा, वह खेल में शामिल न हो सकेगा।" उसने यह सलाह दी।

अगले दिन गुरु ने जो कहा था, लड़कों ने वही किया। उन्होंने अजीब को घेर कर कहा—"एक बड़ा अच्छा खेल है। जो कोई खेल खेलने आयेगा, उसे माँ बाप का नाम बताना होगा।" कुछ के अपने

माँ बाप के नाम बताने के बाद अजीब ने कहा—"मेरी माँ का नाम सित्तल हसन है। मेरे पिता का नाम शम्स अल्दीन वज़ीर है।"

"वज़ीर तुम्हारे नाना है, अपने पिता का नाम बताओ।" "अरे इसे तो अपने पिता का नाम भी नहीं मालूम है।" कई लड़कों ने शोर किया।

अजीब रोता रोता अपनी माँ के पास गया। लड़के को समझाने के बाद, सच मालूम करके, सित्तल हसन अपने पति को याद करके ज़ोर से रोने लगी। जब माँ और बेटे रो रहे थे, तो शम्स उस तरफ़ आया। जब उसे मालूम हुआ कि वे क्यों रो रहे थे, वह भी आँसू बहाने लगा।

फिर शम्स सुल्तान के पास गया। उसने अपने दामाद को ढूँढ़ने की अनुमति ली। सुल्तान ने किसी भी नगर में अपने दामाद को खोजने की लिखित आवश्यक अनुमति भी दी।

शम्स सुल्तान को कृतज्ञता दिखाकर तभी सफ़र की तैयारियाँ करने लगा। एक घंटे में अपनी लड़की और पोते को लेकर बसरा की ओर निकल पड़ा। वे बहुत दिनों बाद डमास्कस पहुँचे। नगर के बाहर डेरे डालकर, वहाँ उन्होंने दो दिन विश्राम करने की ठानी।

डमास्कस बहुत सुन्दर नगर था। इसलिए वहाँ की चीज़ें देखने के लिए शम्स के लोग चले गये। अजीब अपने नौकर सैय्यद के साथ, जिसने उसे छुटपन से पाला था, नगर में चला गया।

वे गलियों में घूमते घूमते हसन की मिठाई की दुकान पर पहुँचे। हसन अब उस दुकान का मालिक था। बूढ़े ने उसको तेरह वर्ष पूर्व गोदी लिया था। बूढ़े के

मर जाने के बाद दुकान हसन के हाथ आ गई थी।

हसन को, अजीब को देखते ही ऐसा लगा जैसे वह उसे खींच रहा हो। यह बिना जाने ही कि वह उसका लड़का था, उसका शरीर पुलकित हो उठा। उसने अजीब से कहा—"अन्दर आओ बाबू, जो मैंने मिठाइयाँ बनाई हैं, वह तुम्हें ज़रूर अच्छी लगेंगी।"

अजीब के मन में भी पिता को देखते ही कुछ गुदगुदी-सी हुई। उसका गला भी कुछ कुछ रुंध गया। उसने सैय्यद से कहा—"देखो, यह आदमी कितने प्रेम से बुला रहा है! आओ, ज़रा मिठाइयों का स्वाद तो चख आयें।"

"नहीं भाई, आप जैसे अमीरों के लड़के, उन गरीबों की दुकानों में नहीं जाया करते। हरगिज नहीं जा सकते।" सैय्यद ने कहा।

"बेटा, मैंने ऐसी कौन-सी गल्ती की है। गुलाम होने मात्र से तुम्हारा हृदय तो नहीं चला जाता।" हसन के मनाने पर सैय्यद कुछ पिघला।

हसन उन दोनों को दुकान में ले गया। उसने चीनी की तश्तरी में बढ़िया मुरब्बे लाकर उनके सामने रखें। अनार का मुरब्बा खास तरह का था। उसमें बादाम और कुछ सुगन्धित मेवे थे। हसन की माँ ने इसका आविष्कार किया था। उसके पास हसन ने इसे बनाना बचपन में सीखा था। अनार का मुरब्बा बनाने का तरीका सिवाय उसकी माँ और उसके किसी और को नहीं आता था।

अजीब ने मुरब्बा खाते समय हसन को बताया कि उसे न मालूम था कि उसका पिता कहाँ था और उसका नाना उसके लिए जगह जगह खोज करवा रहा था।

यह जानने के बाद भी हसन को न सूझा कि वे उसे ही खोज रहे थे।

मुरब्बा क्योंकि बहुत स्वादिष्ट था, इसलिए अजीब और सैय्यद ने ज्यादह खा लिया। क्योंकि अनजाने ही बहुत समय हो गया था, इसलिए सैय्यद अजीब को लेकर डेरों की ओर चल दिया।

अजीब का दुकान छोड़कर जाना था कि हसन का मन छटपटाने लगा। वह लड़का उसको चुम्बक की तरह खींच रहा था। इसलिए हसन ने अपनी दुकान में ताला लगा दिया और जल्दी-जल्दी अजीब के पीछे जाने लगा।

सैय्यद ने पीछे मुड़कर हसन को देखा, तो कहा—"देखा, आपकी मिठाई की दुकानवाला हमारे पीछे आ रहा है। यह मिठाई हमारा कुछ न कुछ करके छोड़ेगी। यदि उसने डेरे में पहुँचकर यह बताया कि हमने उसकी दुकान में मिठाई खायी थी, तो तुम्हारे पिता मुझे यूँही नहीं छोड़ेंगे।"

"तुम यूँही न घबराओ। सैय्यद क्या हमने यह सड़क बनाई है? जब वह हमारे डेरों में आयेगा, तभी हम भेज देंगे।" अजीब ने कहा।

परन्तु हसन शहर से बाहर भी अजीब के पीछे पीछे जाता रहा। पास ही में डेरे थे। अजीब ने झुककर एक ढला उठाया और उसे हसन के माथे पर मारा।

चोट लगते ही हसन नीचे गिर गया। माथे पर लगी चोट से खून बह रहा था। हसन को थोड़ी देर बाद होश आया। उसने पगड़ी में से एक पट्टी फाड़ी, घाव पर बाँधकर यह सोचकर कि उस लड़के के पीछे आना उसकी ही गल्ती थी, दुकान की ओर चला गया।

(अगले अंक में समाप्त)

आने से ऐश्वर्य

एक गाँव में रत्नसिंह एक ज़मीन्दार के यहाँ नौकरी किया करता था। वह ज़मीन्दार की पशुशाला के एक कोने में पत्नी, बाल बच्चों के साथ रहा करता। अपनी मेहनत से वह इस संसार में समय काटता आ रहा था।

एक दिन रात को रत्नसिंह से उसकी पत्नी ने पूछा—"सालों हो गये मेहनत करते करते और हमारा पेट ही मुश्किल से भर पाता है, कल बच्चों की क्या हालत होगी? क्या हमारा कभी भाग्य नहीं चमकेगा?"

रत्नसिंह ने पत्नी से कहा—"व्यापार करके बहुत-सा रुपया कमाया जा सकता है। परन्तु व्यापार करने के लिए पूँजी चाहिये। यह न सोचो कि मैं कोई मूर्ख हूँ। अगर मेरे पास एक आना भी हो तो महीने में हज़ार रुपये बनाऊँ। पर आना भी कहाँ है?"

पति पत्नी की यह बातचीत दीवार के उस तरफ़ खड़े ज़मीन्दार के कानों में भी पड़ी। यह सोच कि देखें एक आने से व्यापार करके कैसे उसका नौकर हज़ार रुपये बनाता है, उसने एक आना रत्नसिंह की झोंपड़ी की ओर फेंका।

अगले दिन जब उसकी पत्नी झाड़ू दे रही थी, तो उसको वह आना मिला। उसे उसने पति को देते हुए कहा—"तुमने कहा था न कि यदि आना मिल गया, तो उससे व्यापार करोगे, लो यह रहा एक आना।"

रत्नसिंह ने उसे ले जाकर ज़मीन्दार को देते हुए कहा—"यह आना पशुशाला में मिला है, यह आप ही का होगा, ले लीजिये।"

ज़मीन्दार ने उस आने को इधर उधर करके परखते हुए कहा—"यह मेरा नहीं है। तुम्हें मिला है, तुम ही रख लो, किसी काम आयेगा।"

रत्नसिंह "अच्छा, हज़ूर" कहकर ज़मीन्दार से विदा लेकर चला गया। एक ऐसा आदमी था, जो गरीबों को छोटी छोटी रकम उधार दिया करता था। उसके पास जाकर रत्नसिंह ने कहा—"इस आने को सूद के मद्दे ले लीजिये और एक रुपया उधार दीजिये। आपका रुपया शाम तक वापिस कर दूँगा।"

उसका रुपया लेकर रत्नसिंह एक और के पास गया, उसे रुपया सूद के मद्दे देकर, दस रुपये यह कहकर उधार लिए कि अगले दिन वापिस दे देगा।

दस रुपये सूद के मद्दे लेकर एक और व्यापारी ने रत्नसिंह को सौ रुपये देकर दस्तावेज़ लिखवा लिये। उसे ले जाकर रत्नसिंह ने एक बड़े व्यापारी को देकर कहा—"यह सूद के हिसाब में ले लीजिये और हज़ार रुपये दीजिये। दस एक दिन में गेहूँ बेचते ही, आपका पैसा आपको दे दूँगा।"

साहुकार ने रत्नसिंह के गाँव, नाम, उसके परिचित ज़मीन्दार का नाम वगैरह सब जानकर, हज़ार रुपये उधार दे दिये। उसी दिन वह रुपया लेकर सौ रुपये, दस रुपये और रुपया का उधार दे दिया। घर जाकर जो कुछ रुपया बाकी रह गया था, उसने पत्नी को दिखाते हुए कहा—"देखा, हमने एक आने से कितने रुपये बनाये हैं।" उसने जो कुछ किया था, कह सुनाया।

"यह भी क्या आय है! उधार तो देना ही होगा। नौ सो रुपये भी नहीं हैं।" पत्नी ने कहा।

"व्यापार करने के बाद कुछ न कुछ लाभ मिलेगा, यह लाभ नहीं हैं, यूँही है।" रत्नसिंह ने कहा।

अगले दिन सवेरे उठते ही वह जौनपुर नाम के गाँव को गया। उस गाँव में किसान जौ पैदा किया करते थे। फसल तैयार थी। रत्नसिंह ने किसानों से मिलकर कहा—"इस साल तुम्हारी फसल मैं खरीदूँगा। अभी ही पेशगी दिये देता हूँ। जब जौ बेचो, या तो मुझे दो, नहीं तो उसको, जिसे मैं कहूँ।" उसने एक एक को पचास, पच्चीस, जैसा

जैसा जरूरी समझा पेशगी दी और उनसे लिखवा लिया। उसने जौ के दाम में भी कोई कमी न की, उसने कहा जो कुछ शहर के व्यापारी देते आये थे, वह भी देगा।

रत्नसिंह के घर आने के दो तीन दिन बाद जब व्यापारियों ने जौनपुर में सुना कि सारी फसल बिक चुकी थी, तो वे बड़े घबराये। क्योंकि जो कुछ मुनाफ़ा उन्हें जौ बेचकर होता था, उस पर वे साल भर गुज़ारा करते थे।

व्यापारियों को पता लग गया कि जिसने पेशगी दी थी, वह फलाने गाँव का रत्नसिंह था। वे उसे खोजते हुए आये। "अरे भाई हमारा नुक्सान करके तुम क्या पाओगे? हम बाप दादाओं के ज़माने से यह व्यापार करते आये हैं। तुम नये आदमी हो। इसलिए यह जौ हमें दे दो।" उन्होंने उसे बहुत मनाया।

"मैं भी भला इतने सारे जौ का क्या करूँगा? मुझे भी बेचना ही होगा। तुम तो जानते ही हो व्यापार का धर्म, मैंने इस दाम पर खरीदा है। उससे कुछ अधिक दाम पर सारा जौ तुम मुझसे खरीद लो।" रत्नसिंह ने कहा।

व्यापारियों ने आपस में सलाह मशवरा करके जौ उतने दाम पर खरीदा कि रत्नसिंह को हज़ार रुपये का फायदा हुआ। रत्नसिंह ने उससे हज़ार रुपये लेकर, साहुकार को उसके हज़ार रुपये दे दिये और बाकी हज़ार रुपये लगाकर उसने थोड़ी ज़मीन खरीद ली। एक घर बनाकर पत्नी और बच्चों के साथ आराम से रहने लगा। ज़मीन्दार भी यह जानकर बड़ा खुश हुआ कि रत्नसिंह ने जो कहा था, वह उसने कर दिखाया था।

शाप विमोचन

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास फिर गया। पेड़ पर से शव उतार कर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, इस आधी रात के समय तुम्हें इस तरह कष्ट झेलता देख, लगता है, तुम भी मलयवती नगर के राजा शूरसेन की तरह शापग्रस्त हो। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उस राजा की कहानी सुनाऊँगा और बताऊँगा कि वह शाप से कैसे विमुक्त हुआ।

जब तक शूरसेन मलयवती नगर का राजा रहा, तब तक वहाँ की प्रजा नाना कष्ट झेलती रही। पर्वत प्रान्त के लोग उसका कुशासन न सह सके। उन्होंने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उन्होंने राजा के विधान का ही उल्लंघन न किया,

छोड़ दिया, तो वे भी अराजकता छोड़ देंगे। राजा ने उन सबको सन्धि के लिए एक झील के पास बुलवाया और जब वे आये तो उनको झील में धकेलवा दिया। फिर उसने अपना अन्यायपूर्ण राज्य जारी रखा। आखिर वह मर गया।

मृत्यु के बाद, शूरसेन महाराजा की आत्मा झील के नीचे के पहाड़ में बन्दी हो गई। यमदूतों ने राजा को लाकर पहाड़ में एक घर में रखा। उसको एक पालतू बिल्ली भी दी, ताकि उसके साथ वह समय काट सके।

उस घर में बहुत-सा सोना जमा कर दिया। राजा की कमर में उन्होंने एक बड़ी-सी तलवार भी लटका दी।

उन्होंने उससे कहा—"जब तक तुम अपनी पालतू बिल्ली, प्रिय धन और तलवार न छोड़ सकोगे तब तक तुम पहाड़ से न उतर पाओगे। कहीं जा न सकोगे। स्वयं तुम इन्हें छुड़ा न सकोगे। किसी साहसी को ही यह करना होगा, नहीं तो किसी को तुम पर तरस खाकर यह करना होगा। तब तक तुम इस पहाड़ के कैदी हो।" कहकर वे अदृश्य हो गये।

किन्तु वे कर जो प्रजा से उसको मिलने थे, वे जबर्दस्ती इकट्ठा करके ले गये। राजा ने उनका दमन करने के लिए हथियारमन्द सिपाही भेजे। पर वे भी विद्रोहियों में मिल गये। धीमे धीमे विद्रोहियों की शक्ति बढ़ती गई। मामूली जनता में भी राजा के प्रति क्रोध और विद्रोहियों के प्रति गौरव की भावना उठने लगी।

शूरसेन ने परिस्थिति का अध्ययन करके, विद्रोहियों के नेताओं के साथ समझौता करने की सोची। विद्रोहियों ने खबर भिजवाई कि यदि राजा ने अन्याय करना

कुछ दिन तो राजा को यह एकाकी जीवन अधिक नहीं अखरा। परन्तु होते होते उसे यह बड़ा दण्ड-सा लगा। कई साल बीत गये। फिर सदियाँ बीत गईं। जो उसके परिचित थे, वे सब मर चुके थे। मगर उसके पास कोई न आया था। जिन्होंने राजा की आत्मा को पहाड़ पर देखा था, उन्होंने इस बारे में प्रचार भी किया। वह पहाड़ भूत का पहाड़ कहा जाने लगा और उसके नीचे की झील भूतों की झील के नाम से जाने लगी। उस तरफ लोगों ने आना जाना छोड़ दिया। यदि कोई भटककर उस तरफ आता भी, तो उसकी आवाज सुनकर भाग जाता। इस तरह चार सौ वर्ष बीत गये।

शूरसेन को विमुक्ति न मिली। होते होते मलयवती नगर भी उजड़ गया।

भूतों के पहाड़ के पास एक गाँव था। वहाँ गोपाल नाम का एक गरीब लड़का था। वह एक भूस्वामी के पास नौकर था। भूस्वामी की लक्ष्मी नाम की एक लड़की थी। उसे गोपाल पर बड़ा आदर था। अभिमान भी। गोपाल को लक्ष्मी से प्रेम हो गया। "मैं तुम से विवाह करना चाहता हूँ। क्या तुम्हें कोई आपत्ति है?" गोपाल ने पूछा, लक्ष्मी ने कहा—"मैं क्या कह सकती हूँ। पिता जी को मानना है न!"

यह सोच कि भूस्वामी के मानने पर लक्ष्मी उससे विवाह कर लेगी, गोपाल ने साहस करके मालिक से अपनी इच्छा के बारे में कहा। भूस्वामी सुनते ही खौल उठा—"अबे, तुम्हें इतना घमंड। मैं अपनी लक्ष्मी को तुम जैसे दरिद्र को दूँगा! जब तुम में इतना घमंड और लालच है, तब तुम मेरे नीचे कैसे काम करोगे! अगर दम

है, तो ढेर-सा सोना लाकर दिखाओ। तब लड़की के बारे में सोचेंगे।"

गोपाल की इच्छा तो पूरी हुई नहीं और हाथ का काम भी जाता रहा। ढेर-सा सोना तो कहाँ से लाता, वह मुट्ठी-भर सोना भी न पा सकता था। वह अपने मालिक के मकान से, पहाड़ के पास एक और गाँव में गया। वह निराश हो, सिर नीचा किये, झील के किनारे किनारे जा रहा था कि उसे ऐसा लगा, जैसे कोई पुकार रहा हो।

गोपाल ने जब सिर उठाकर देखा, तो पहाड़ पर उसे विचित्र-सी आकृति दिखाई दी। कोई पुराने जमाने का राजा-सा लगता था। उसने सुन रखा था कि उस पहाड़ पर भूत थे। गोपाल ने यह सोच कि यह कोई भूत ही होगा, पूछा—"आप कौन हैं? आपको मुझ से क्या काम है?"

"मैं शूरसेन महाराज हूँ। यदि तुम सचमुच साहसी हो, तो आज रात यहाँ आकर मुझे मुक्त करो। मेरे पाप ही मेरा शाप बन गये यदि तुमने मुझे छुड़ा दिया तो तुम जितना सोना माँगोगे उतना दे दूँगा।" महाराजा शूरसेन ने कहा।
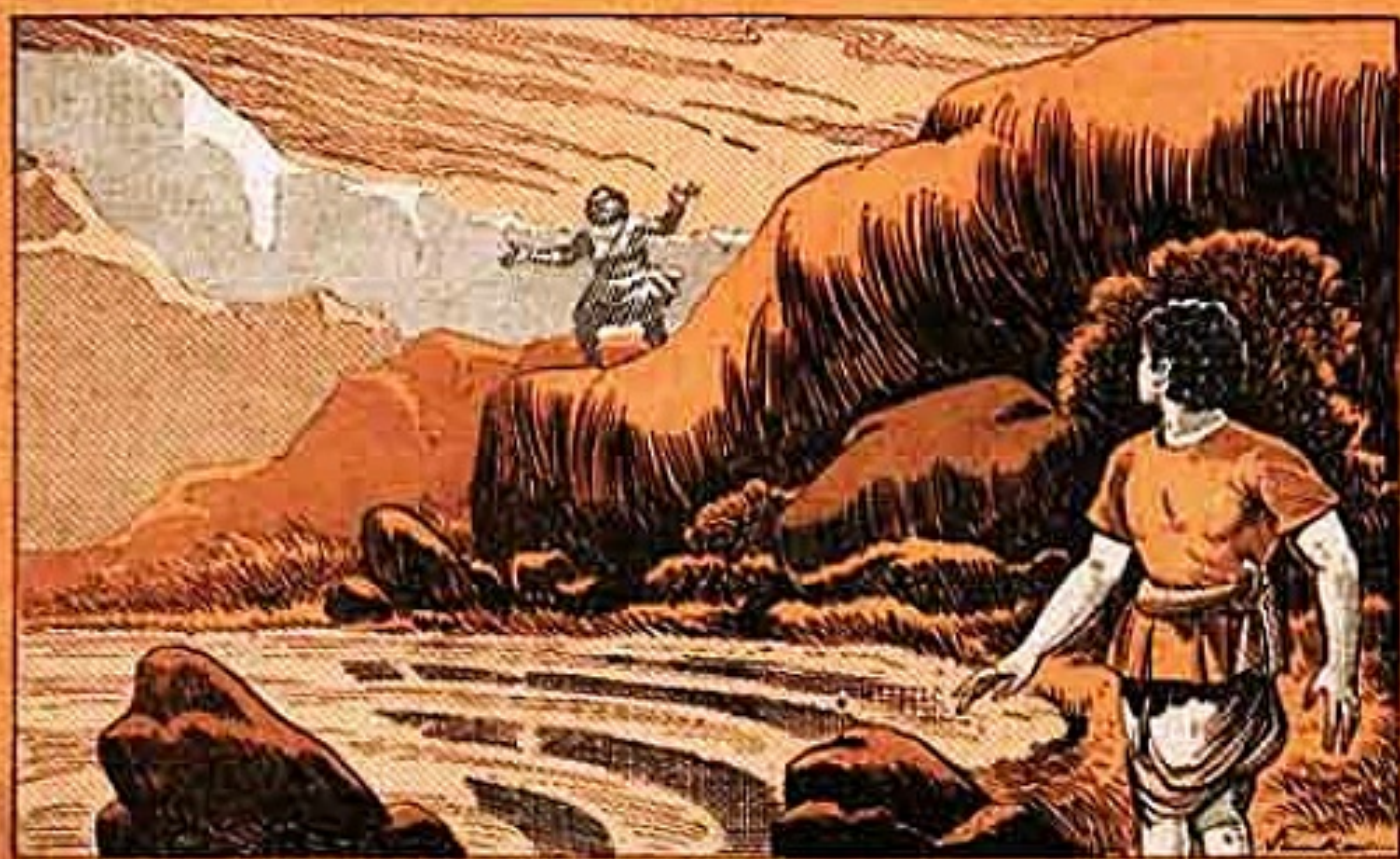
"अच्छा, तो रात को आऊँगा।" गोपाल ने निश्चिन्त होकर कहा। जब उस दिन रात को वहाँ पहुँचा, तो शूरसेन, पहाड़ पर खड़ा होकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। गोपाल के पास आते ही उसने उससे अपने बन्धनों के बारे में कहा। यह भी बताया कि यह खतरनाक काम है। यदि तुम में सचमुच धैर्य और साहस हो, तभी करो। यदि तुमने मेरा कहा सुना, तो मुझे मुक्त करने का पुण्य तुम्हें मिलेगा। और तुम जितना सोना चाहते हो, उतना मिलेगा। नहीं तो जब तक सचमुच साहसी न हो जाओगे तब तक मेरे बन्धन न छूटेंगे।"

"मुझे कोई भय नहीं है। बताइये, मुझे क्या करना है?" गोपाल ने कहा।

शूरसेन ने गोपाल के हाथ को छुआ। तुरत वे दोनों पहाड़ में बने एक अजीब घर में चले गये। उस घर में किवाड़ न थे। जहाँ देखो वहाँ तलवार, भाले, ढाले, धनुष, बाण और अस्त्र शस्त्र थे। एक तरफ़ बड़े से पीपे में सोने के गहनें चमचमा रहे थे।

गोपाल अभी चारों तरफ़ घूमकर देख ही रहा था, एक बड़ी बिल्ली शेर की तरह

उस पर कूदी। उसे देख गोपाल सन्न रह गया।

"यह मेरी बिल्ली है। इसे ले जाकर पहिले झील में डाल आओ। पर यह याद रखो, चाहे जितना भी डर लगे, दर्द हो पर तुम्हारे मुख से एक शब्द न निकले। यदि तुम गुनगुनाये, नहीं तो चिल्लाये तो मुझे मुक्ति न मिलेगी और तुम्हारे प्राण भी न रहेंगे। इसके बाद क्या करना है, फिर बताऊँगी।" शूरसेन ने कहा।

गोपाल ने कुछ न कहा—"बिल्ली को दोनों हाथों से उठा लिया। शूरसेन के उसको छूते ही, एक दीवार ने उनको रास्ता दिया। उसमें से वे झील तक चलते आये। पानी के किनारे खड़े होकर उसने बिल्ली को पानी में फेंक दिया। उसी समय बिल्ली ने अपने नाखूनों से खरोंचा। उसे बड़ा दर्द हुआ। दर्द के कारण वह चिल्लाने ही वाला था कि उसे शूरसेन की बात याद हो आई, वह चुप रहा। और जैसे तैसे उसने दर्द सह लिया।

उसके झुककर झील के पानी में हाथ धोने के लिए जाते ही तब तक जो पानी मामूली पानी था, उसके छूते ही वह उबलने लगा। उसकी गरमी से उसका मुँह झुलस-सा गया। उसने इस बार भी दर्द सह लिया, जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते शूरसेन के पास भागा।

"वाह, तुम साहसी ही हो। यदि तुमने एक और काम किया, तो मेरा विमोचन हो जायेगा। मेरी कमर में जो यह तलवार है उसे निकालो। अब भी पहिले की तरह मौन रहना होगा, समझे।" शूरसेन ने कहा।

गोपाल को यह बहुत आसान-सा काम लगा। उसने शूरसेन के कमरे में बन्धी तलवार की रस्सी छूने की कोशिश ही

की थी कि वह इतना बड़ा हो गया कि वह रस्सी उसकी पहुँच से करीब करीब दूर हो गई। गोपाल ने अंगुलियों के बल खड़े होकर, बड़ी मुश्किल से वह रस्सी खोली। परन्तु तुरत वह तल्वार उसके पैर पर गिरी और उसे इतना दर्द हुआ कि वह मरते मरते बचा।

उसके मुख से अनायास आवाज़ निकलने ही वाली थी कि गोपाल ने बड़ी कठिनाई से वह दर्द भी सह लिया।

"बेटा, तुमने मुझे चार सौ सालों के बाद कैद से छुड़ाया है। जितना सोना तुम्हें दिखाई दे रहा है, उसमें से जितना चाहो, उतना ले जाओ। मैं चला जाऊँगा।" शूरसेन ने कहा।

गोपाल ने पगड़ी उतारी। उसमें ढेर-सा सोना बाँध लिया। इतने में शूरसेन और उसका घर स्वप्न की तरह अदृश्य हो गया। गोपाल पहाड़ पर था। पूर्व में सवेरा हो रहा था। यदि हाथ में सोने की मोहरों की गठरी न होती तो, जो कुछ हुआ था, वह सपना-सा ही लगता।

गोपाल ने यह सोना लेजाकर भूस्वामी के पास रखकर कहा—"यह लीजिये

सोना, जिसे आपने माँगा था। लक्ष्मी का मेरे साथ विवाह कीजिये।" भूस्वामी इसके लिए मान गया और उसने अपनी लड़की का उसके साथ विवाह कर दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। यह जानते हुए भी कि वैसा करना खतरनाक था, क्यों गोपाल शूरसेन के विमोचन के लिए तैयार हो गया? क्या इसलिए कि वैसा करने से उसको सोना मिलेगा और सोना लेकर वह लक्ष्मी के साथ विवाह कर सकेगा? या इसलिए कि वह उस लक्ष्मी से विवाह न कर पाया था, जिससे उसने इतना प्रेम किया था और इस जीवन से विमुख हो गया था? या इसलिए कि शापग्रस्त शूरसेन की आत्मा पर उसे तरस आ गया था? यदि तुमने इन प्रश्नों का उत्तर जान बूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रमार्क ने कहा—"गोपाल यदि स्वभाव से डरपोक होता तो धन का लालच, या प्रेम, या दया, उसे साहसी नहीं कर सकते थे। गोपाल वस्तुतः साहसी था। इसलिए ही उसने अपने मालिक से साफ़ साफ़ कहा था कि वह उसकी लड़की से विवाह करना चाहता था। यदि कोई असम्भव काम आ पड़े तो सच्चा साहसी उसे करते नहीं हिचकता। इसलिए गोपाल के साहसिक कार्य करने का कारण उसका साहस ही था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

घोड़े पर सवार हुआ

भीम जंगल के रास्ते से नानी के गाँव जा रहा था कि रास्ते में उसे एक जगह एक पेड़ से एक सुन्दर घोड़ा बँधा दिखाई दिया। भीम घोड़े के सामने रुका, खुशी खुशी उसे देखने लगा।

जब से उसने साहुकार को घोड़े पर सवार देखा था, वह भी घोड़े पर सवारी करने के लिए उतावला हो रहा था। साहुकार ने बताया था कि घोड़ा पाँच सौ रुपये में खरीदा जा सकता था। चोरों के पकड़वाने पर उसे पाँच सौ रुपये ईनाम में मिले थे।

वह घोड़ा साहुकार के घोड़े से बहुत अधिक सुन्दर था। भीम ने सोचा कि क्या अच्छा हो, यदि उसे कोई वह घोड़ा अभी बेच दे।

वह यह सोच ही रहा था कि पेड़ों के पीछे से कोई आया। उसने पूछा—"तुम कौन हो? तुम उस घोड़े की तरफ़ क्यों यों देख रहे हो?"

"क्या इसे बेचोगे? मैं खरीदूँगा।" भीम ने कहा।

उस आदमी ने कुछ देर सोचकर पूछा—"क्या दोगे?"

"क्या तुम सोच रहे हो कि मैं घोड़ों का दाम नहीं जानता हूँ? पाँच सौ रुपये। ये लो इस थैली में पाँच सौ रुपये हैं, चाहो तो ले लो।"

उस आदमी ने वह थैली ले ली। उसने कहा—"तुम ले जाओ, इस घोड़े को।"

सच तो यह था कि वह घोड़ा उसका न था, किसी ज़मीन्दार का था। उस

ज़मीन्दार की एक लड़की थी—जिसका नाम महालक्ष्मी था। घुड़सवारी में वह बड़ी निपुण थी।

जब उसके पिता उसके लिए वर खोज रहे थे, तो उसने शर्त लगाई थी कि जो कोई उस घोड़े पर सवारी कर सकेगा, उससे ही वह शादी करेगा। इस घोड़े पर सवारी करना आसान न था। कई ने सवारी करने की कोशिश की, पर वे सफल न हुए और अपमानित भी हुए।

इस प्रकार अपमानित हुए एक व्यक्ति ने मौका देखकर, यह घोड़ा चुरा लिया। उसे जंगल में बाँधकर, वह एक आदमी को उसकी रखवाली के लिए छोड़ चला गया। उस आदमी ने अब वह घोड़ा भीम को बेच दिया था। यदि भीम पचास रुपये भी देता, तो वह उसे दे देता। यह भीम न जानता था। वह तो यही जानता था कि घोड़े का दाम पाँच सौ रुपया था। जो एक बात उसके दिमाग में घर कर जाती थी, वह फिर न बदलती थी। उसका दिमाग भी तो उसी की तरह मोटा था।

घोड़े बेचनेवाले ने भीम से पूछा—"क्या तुम घोड़े पर सवारी करना जानते हो? कभी सवारी की है?"

"मैंने कभी घोड़े पर सवारी नहीं की। पर यह भी ऐसी कौन-सी बड़ी बात है!" भीम ने कहा।

"पहिले घोड़े पर सवार हो जाओ, फिर घोड़ा खोल दूँगा।"

भीम जब घोड़े पर सवार हो गया तो उस आदमी ने घोड़े के गले में बँधी रस्सी खोल दी। तुरत घोड़ा बाण की तरह भागने लगा।

भीम क्योंकि ताकतवर था उसने लगाम ज़ोर से पकड़ ली। पैर घोड़े से सटाये रखे,

इसलिए नीचे नहीं गिरा और कोई होता, तो तेज़ घोड़े पर से कभी का गिर गया होता।

भीम नीचे तो नहीं गिरा, पर न वह उसकी तेज़ी कम कर सका, न उसको वहाँ ले जा सका, जहाँ ले जाना चाहता था। न उसे रोक ही सका, वह यह भी न जानता था कि वह किस तरफ़ जा रहा था। जानता भी, तो कोई फायदा न था। चाहे वह जहाँ जा सकता था, यह घोड़े की ही इच्छा थी, उसकी इच्छा इसमें कुछ भी न थी।

घोड़ा ठीक ज़मीन्दार के घर पहुँचकर रुका। ज़मीन्दार के नौकर चिल्लाये—"जो घोड़ा, चोर चुरा ले गये थे वह वापिस आ गया है।" उन्होंने भीम को घेर लिया।

"चोरी! वाह, इसे तो मैंने पाँच सौ रुपये में खरीदा है। कोई नुक्सान नहीं हुआ, खूब दौड़ता है।"

नौकर भीम को ज़मीन्दार के पास ले गये। भीम ने ज़मीन्दार से इतना ही कहा कि उसे चोरों को पकड़वाने के कारण पाँच सौ रुपये ईनाम में मिले थे। उन पाँच सौ रुपयों से जंगल में घोड़ा खरीदा। अब उस पर सवार होकर यहाँ आया हूँ।
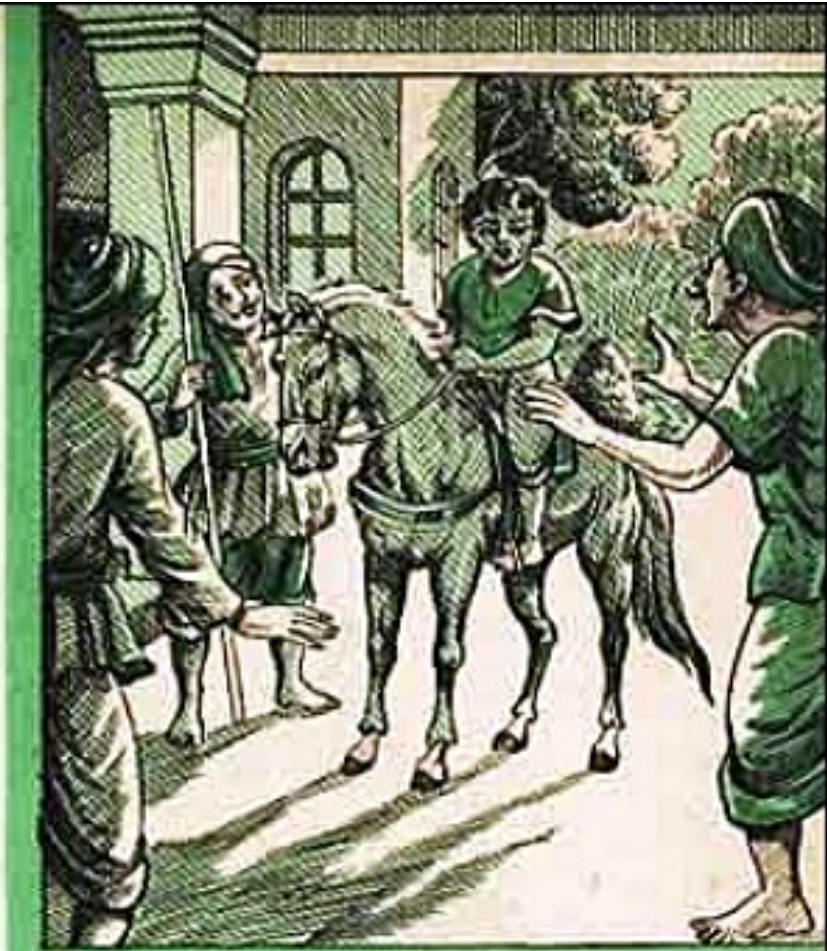
जब महालक्ष्मी को यह मालूम हुआ कि उस घोड़े पर, जिस पर कोई सवारी न कर सकता था, उसने सवारी की थी, तो वह उससे विवाह करने के लिए मान गई। ज़मीन्दार ने भी सोचा। यदि घोड़े पर सवारी करने के अलावा, चोरों को भी पकड़वाया है, तो वह योग्य ही होगा। फिर भी उसने सोचा कि अच्छा है कि उसका पद वगैरह जान लिया जाये। फिर भी उसने भीम से पूछा—"बेटा, तुम हमारी लड़की से विवाह करोगे?"

"हाँ, मेरी नानी भी खुश होगी। मेरी नानी यह सोच बड़ी तंग रहती है कि मेरी कभी शादी न होगी।" भीम ने कहा।

"यदि मैंने अपनी लड़की की शादी तुमसे की तो तुम क्या देगो?" ज़मीन्दार ने पूछा।

"बाद, नानी ने एक घड़े में सोना-भर रखा है। वह सब आप ले लीजिये।" भीम ने कहा।

"ओ, यह तो अच्छा सम्बन्ध है। घड़ा-भर सोना तो हमने कहीं भी न देखा।" यह सोच ज़मीन्दार ने विवाह के लिए मुहूर्त निश्चय कर दिया। नानी और सोने के लिए ज़मीन्दार ने आदमी भेजे।

जिसे "पगला" कहा करती थी, वह अब किसी ज़मीन्दार के घर आई। जब तक भीम की उसकी लड़की से शादी न हो गई, उसने यह न बताया कि वह बावला था। शादी के बाद उसने महालक्ष्मी से कहा—"बेटी, तुम्हारा पति निरा बावला है। उसे मैंने ही पाल पोसकर बड़ा किया है, अब तुम ही उसकी देखभाल करो। वह अक़्लमन्द भी नहीं है, पर एकदम निष्कपट है।" उसने सब कुछ साफ़ साफ़ बता दिया।

महालक्ष्मी अक़्लमन्द थी। नानी की बात समझकर उसने कहा—"मैं आपके पोते को अच्छी तरह देखूँगी, मैं अपने पिता की इकलौती हूँ। इसलिए वे आपके पोते को यहीं रखलेंगे। आप भी यहीं रहिये।"

परन्तु नानी वहाँ न ठहरी। यह कह कि उसे अपने घर आँगन की देखभाल करनी थी, भीम को ज़मीन्दार के घर छोड़, अपने घर वापिस चली गई।

[अगले मास अन्तिम घटना]

विद्या की महिमा

देवगिरी नामक ग्राम में रहनेवाले सोमदेव के दो लड़के थे। बड़ा लड़का ज़मीन जायदाद की देखभाल करता। दूसरा लड़का जयदेव पढ़ने की इच्छा से घर छोड़कर, उपयुक्त गुरु को खोजता, देश देश दिन-रात घूमने लगा।

जयदेव बिना भोजन के, बिना नींद आराम के, बहुत दिन घूमने के बाद आखिर एक गाँव में हरिशर्मा के घर के सामने बेहोश होकर गिर गया।

हरिशर्मा, जयदेव को अपने घर में ले गया, पीने के लिए पानी देकर, नहलाकर, भोजन देकर उसकी सारी बात उसने मालूम कर ली।

हरिशर्मा को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जयदेव पढ़ने के लिए घर छोड़कर गुरु की खोज कर रहा था। वह बड़ा पंडित था। इसलिए जयदेव को उसने अपने घर में रखकर, भोजन देकर, शिक्षा दी।

जयदेव बुद्धिमान था, इसलिए तीन साल में उसे जो गुरु के यहाँ सीखना था, उसने सब सीख लिया।

फिर हरिशर्मा ने जयदेव से कहा— "बेटा, तब तक तुम्हारी विद्या पूरी न होगी जब तक जंगलियों का राजा तुम्हें चोरी, शिकार आदि करना न सिखायेगा।"

हरिशर्मा ने जो रास्ता बताया था, उस पर चलता, जयदेव जंगली राजा के यहाँ पहुँचा।

यह जानकर कि हरिशर्मा ने उसे भेजा था, उसने जयदेव को एक वर्ष अपने यहाँ रखा। उसे चोरी करना, चोरों को पकड़ना
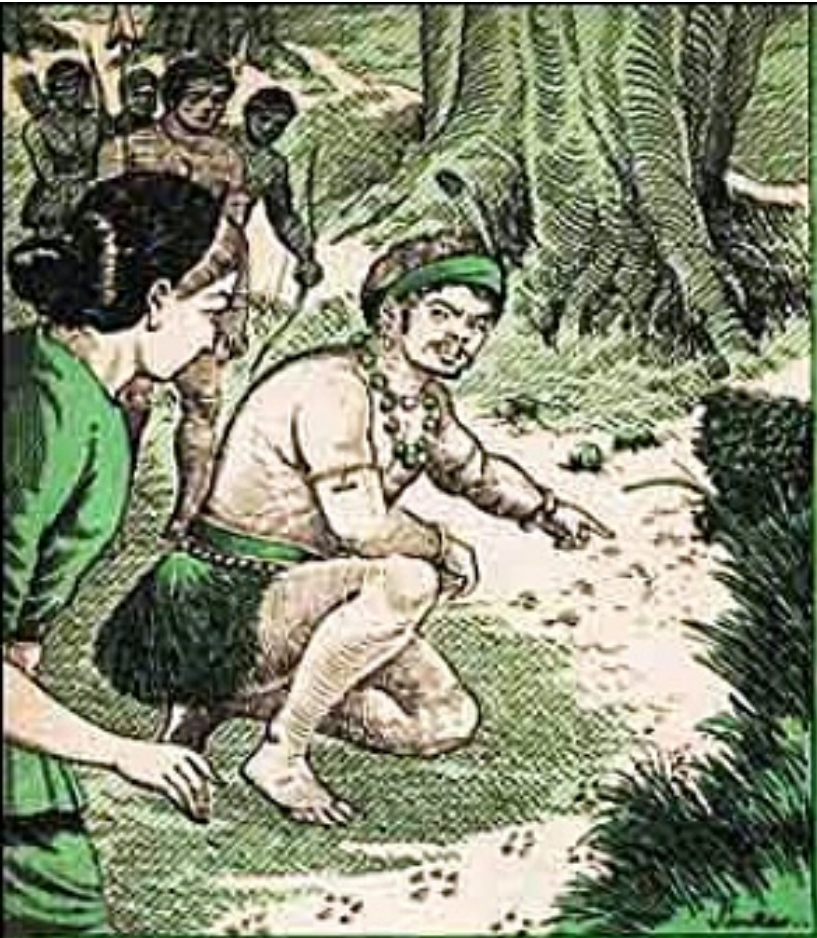
पशुओं का पता करना, शिकार करने आदि की विद्या सिखाई।

इस तरह सब विद्यायें सीखकर, जब जयदेव घर आ रहा था, तो एक गाँव में उसने एक ब्राह्मण से कुछ पानी देने के लिए कहा। उस घर के मालिक ने उसे अन्दर बुलाया, उसका सत्कार आदि किया।

उसके बारे में जानकर उसने पूछा—"तुम्हारी विद्या-शिक्षा की परीक्षा के लिए क्या मैं एक प्रश्न करूं?"

"पूछिये।" जयदेव ने कहा।

"तुम्हारे आने से पहिले यहाँ कौन आया था? इस घर के सामने से कौन पहिले पहिले गये हैं? बताओ, तो देखें!" घर के मालिक ने पूछा।

जयदेव उठकर बाहर गया। थोड़ी देर बाद वह वापिस आया। "मेरे आने के पहिले यहाँ चार आदमी आये थे। वे या तो सैनिक थे, नहीं तो राजभट। वे आपके घर से आगे चले गये हैं। उनसे पहिले एक आदमी आपके घर के सामने से गया था। उसके सिर पर कोयले का बोरा था। उसने कोई चोरी की होगी।" उसने उस घर के मालिक ब्राह्मण से साफ़ साफ़ कहा।

यह सुन ब्राह्मण घबरा गया—"सच है कि हमारे घर चार राजभट आये थे। हुआ ऐसा कि रानी की एक मणि देवालय के आस पास गिर गिरा गई थी। इससे पहिले कि यह जाना जा सका कि वह खो गई थी, उसे कोई ले गया। इसलिए राजभटों ने आकर सबके घरों की तालाशी ली। हमारे घर की भी तालाशी ली। पर चोरी गयी मणि न मिली। क्योंकि तुम कह रहे हो कि चोर हमारे घर के

सामने से ही गया है, यदि तुमने चोर को पकड़वाकर मणि रानी को दिल्वा दी, तो तुम्हें बहुत-सा ईनाम मिलेगा।" ब्राम्हण ने कहा।

जयदेव ब्राम्हण से यह कहकर कि वह फिर आयेगा, रास्ते पर ही नज़र गाड़कर, एक घर तक गया। वह एक सुनार का घर था। जयदेव घर के अन्दर गया।

सुनार से सोने का दाम पूछकर उसके बनाये हुए नये गहनों के बारे में पूछताछ कर, वह बाहर चला आया। फिर उसने ब्राम्हण के पास आकर कहा—"मैं चोरों को पकड़वा दूँगा। राजभटों को बुलवाइये।"

ब्राम्हण ने राजभटों को बुलवाया। पर उसने उससे पूछा—"पर यह सब तुमने कैसे मालूम किया?"

"सैनिक और युद्ध विद्या में प्रवीण भट जब चलते हैं, तो उनके कदम बराबर बराबर पड़ते हैं। वे एक तरीके से चलते हैं, साथ साथ। इसलिए उनके पगचिन्हों से मैं जान पाया कि चार आदमी आपके यहाँ आये थे और उससे अनुमान कर लिया कि या तो वे सैनिक होंगे, नहीं तो भट। मुझे यह भी दीखा कि वे आपके घर से आगे कहीं चले गये थे।" जयदेव ने निस्संकोच कहा।

"परन्तु चोर के बारे में कैसे मालूम हुआ?" ब्राम्हण ने पूछा।

"चोर बीच रास्ते में नहीं चलेगा। एक तरफ़ चलेगा। इस चोर के सिर पर कोयले का बोरा था। जब जब वह कदम रखता, तो थोड़ा थोड़ा कोयला भी गिरता।" कहता कहता जयदेव थोड़ी देर रुका।

कुछ सोचने के बाद कहा—"उसके पगचिन्हों से जाना जा सकता है कि वह हमेशा आगे आगे न चलकर, पीछे

मुड़कर भी देखता जाता था। उसने यह इसलिए किया होगा, क्योंकि उसे भय होगा कि उसका कोई पीछा कर रहा था। इसलिए मैंने अनुमान कर लिया कि उसने कोई चोरी की होगी। यही नहीं, उसके पग चिन्ह राजभटों के चिन्हों से कुछ अधिक बिगड़े हुए थे। इसलिए उसके इस तरफ़ से गये कुछ देरी हो गई है। यह भी अनुमान किया जा सकता है। क्योंकि इस बीच कोई और चोरी नहीं हुई है, इसलिए राजभट इस चोर को ही खोज रहे होंगे।" जयदेव ने कहा।

वे यों बातें कर रहे थे कि राजभट उस तरफ़ आये। जयदेव उनको सुनार के पास ले गया। उस घर की राजभटों ने पहिले ही तलाशी ले ली थी, परन्तु उन्होंने सन्दूक वगैरह ही देखे थे।

सुनार जब कुछ छुपाते हैं, तो किसी छेद में छुपाते हैं। यह जयदेव जानता था। उसने उसने रानी की मणि, सुनार के घर के एक छेद में से देख दाखकर निकाली।

सुनार ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने रानी की मणि को नीचे गिरते देख लिया था और उसे उठा लिया था। ताकि किसी को कोई सन्देह न हो, उसने एक कोयले की बोरी खरीद ली, जैसे उसे खरीदने को वह घर से निकला हो।

जयदेव को राजा ने खूब ईनाम दिया। जब ब्राह्मण ने बताया कि उसने चोर कैसे पकड़ा गया था, तो वह और भी खुश हुआ। यह जानकर कि वह सब विद्याओं में पारंगत था, उसने उसको अपने यहाँ ही नौकर रखकर उसका आदर किया।

अयोध्या काण्ड

उस दिन रात को भारद्वाज ने कई कहानियाँ सुनाईं। उन्हें सुनकर वे तीनों आराम से सो गये।

अगले दिन सवेरे उन्हें कुछ दूर तक भारद्वाज छोड़ने आये। उन्होंने चित्रकूट जाने के लिए रास्ते के कई चिन्ह बताये।

सीता, राम और लक्ष्मण उनके बताये हुए रास्ते पर चलते चलते उस जगह पहुँचे, जहाँ यमुना नदी पार करने के लिए एक घाट था।

वहाँ लक्ष्मण ने एक तमेड़ बनाई। उस पर जामून की टहनियों और बेलों से सीता के लिए एक आसन बनाया। ये भी अपनी वस्तुएँ तमेड़ पर रख नदी पार गये।

यमुना नदी के बीच में आकर सीता ने उसी प्रकार यमुना को भी नमस्कार किया जिस प्रकार गंगा को किया था। उसने मनौती की कि वह गौवें दान देगी।

वसन्त का समय था। इसलिए वन की शोभा निराली थी। पेड़ों पर रंग बिरंगे फूल थे। सीता वसन्त की शोभा देखकर आनन्दित होने लगी।

लक्ष्मण उनके आगे आगे जा रहे थे, जो जो फूल या फल वे माँगतीं वह लाकर देते, जो जो प्रश्न पेड़ों के बारे में पूछती, सब बताते।

उन्होंने रास्ते में जैसे तैसे अपनी भूख मिटायी। एक समान-स्थल देखकर वे वहीं सो गये।

सवेरे होते ही राम उठे। लक्ष्मण को उठाकर वे चित्रकूट की ओर चल पड़े।

चित्रकूट प्रान्त में राम ने एक सुन्दर जगह देखकर वहाँ पर्णशाला बनाने के लिए उन्हें कहा।

लक्ष्मण बड़े बड़े तने काटकर लाये। उन पर उन्होंने एक पर्णशाला बनायी, फिर उसमें उन्होंने आवश्यक विभाग बनाये। गृह देवता को उन्होंने बलि भी दी।

राम और लक्ष्मण ने उसमें शास्त्रोक्त रीति से प्रवेश किया।

पास में बहनेवाली माल्यवती नदी में स्नान करते, सुन्दर वन में विहरण करते, नागरिक जीवन को भुलाकर आराम से वे समय काटने लगे।

उधर शृंगिवेर पुर में गुह और सुमन्त्र, गंगा के किनारे जब तक सीता, राम, लक्ष्मण ओझल न हो गये, वहीं खड़े खड़े देखते रहे। फिर वे गुह के घर चले गये।

सुमन्त्र दो तीन रोज यह सोचकर कि राम कहीं अपना निश्चय बदल लें और फिर अयोध्या आना चाहें, वहीं रहा। जब वे न आये, तो वह अयोध्या के लिए रवाना हुआ। राम के अयोध्या छोड़ने के पाँच दिन बाद वह वहाँ पहुँचा।

रास्ते में खाली रथ को जाता देख, लोगों ने तरह तरह की बातें कहीं। सुमन्त्र सीधे कौशल्या के घर गया। सिंहासन पर बैठे दशरथ से राम ने जो कुछ कहा था बताया। वे बातें सुनकर दशरथ मूर्छित हो गये।

कौशल्या ने सुमित्रा की सहायता से दशरथ को उठाया। "महाराज, राम को

बन में छोड़कर आया है, सुमन्त्र को वे जवाब तक नहीं देते! क्या इसलिए कि कहीं कैकेयी बुरा न मान ले। वह तो यहाँ नहीं है!" दशरथ के साथ कौशल्या और अन्तःपुर की स्त्रियाँ भी रोयीं।

"मेरी आज्ञा का कितना महत्व है, मैं नहीं जानता। तुम जाकर राम को वापिस ले आओ। नहीं तो मुझे राम के पास ले जाओ।" दशरथ ने कहा।

कौशल्या ने भी सुमन्त्र से राम के पास ले जाने के लिए कहा। सुमन्त्र ने कौशल्या को ढाढ़स दिया। उसने बताया कि राम, लक्ष्मण वनवास की अवधि आसानी से काट देंगे। सीता को तो वह वन ही न लग रहा था। शायद राम के बिना अयोध्या ही वन-सा प्रतीत होता।

अगले दिन कौशल्या दशरथ को जली कटी सुनाती रही। इस तरह वह अपनी व्यथा को कुछ कम कर सकी। दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि वह जली कटी न सुनाये। कौशल्या पुत्र शोक में तो थी ही, अब पछताने भी लगी।

राम के चले जाने के छटे दिन, जब उनकी मृत्यु कुछ घड़ियों में होनेवाली थी

कि दशरथ को बचपन की एक घटना याद हो आयी। तब उसका कौशल्या से विवाह न हुआ था। उसको शाप मिला था कि वह पुत्र शोक में मर जायेगा। अब उसने कौशल्या से उस घटना के बारे में सब कुछ बताया।

उन दिनों दशरथ यौवन में था। वह ध्वनि सुनकर बाण छोड़ने में बड़ा निपुण था। इस शब्द वेधी नैपुण्य की हर कोई प्रशंसा करता।

तब दशरथ युवराज ही था। वह प्रायः रात में सरयू नदी के किनारे जाया करता।

वह वहाँ एक ऐसा घाट देखता, जहाँ जंगली जानवर पानी पीने के लिए प्रायः आया करते। वह पास ही कहीं छुप जाता। पानी पीने की ध्वनि सुनकर वह बाण छोड़ता और इस तरह हाथी और मृगों का शिकार करता।

एक बार वर्षा ऋतु में, रात के समय गाढ़ अन्धकार में, दशरथ पशुओं की प्रतीक्षा करता छुपा बैठा था। उस समय नदी के किनारे बुड़ बुड़ ध्वनि हुई। यह सोच कि कोई हाथी पानी पी रहा था, उसने तेज बाण छोड़ा।

तुरत एक मनुष्य का क्रोध भरा स्वर सुनाई दिया—"हम जैसे तपस्या करनेवालों पर क्यों यह बाण छोड़ा गया है! मैंने किसी का क्या अपकार किया है! जो मुझे मार रहा है, उसे क्या मिलेगा! न मालूम कौन है, एक ही बाण से उसने तीन प्राण ले लिए! अगर मैं मर गया तो बूढ़े अन्धे मेरे माँ बाप कितने दिन जीवित रहेंगे! कैसे जीयेंगे!" दशरथ को यह सुनाई दिया।

उसने जाकर देखा तो एक मुनि बालक बाण की पीड़ा से छटपटा रहा था। वह पात्र, जो उसने पानी में डुबाया था, पास ही पड़ा था।

हतःप्रभ, स्तब्ध, दशरथ से उस मुनि बालक ने कहा—"क्यों तुमने यह नीच कार्य किया! तुम जाकर मेरे पिता से कहो कि मैं यहाँ हूँ। नहीं तो वे न जान सकेंगे। अगर जान भी गये तो वे न आ सकेंगे। उनको प्यास लगी थी, इसलिए पानी लाने आया था और तुम्हारे बाण का शिकार हो गया। मैं यह पीड़ा सह नहीं सकता। पहिले यह बाण खींच दो, फिर जाओ।"

लड़का दर्द के कारण छटपटा रहा था। बाण निकाल दिया गया तो कहीं वह मर न जाये, यह सोच कुछ देर दशरथ खड़ा रहा। फिर उस लड़के के बहुत कहने पर उसने बाण निकाला। तुरत मुनि बालक ने प्राण छोड़ दिये।

दशरथ उस लड़के के पात्र में पानी लेकर, उसके बताये हुए रास्ते से, उसके माँ बाप के पास गया।

दशरथ की पगध्वनि सुनते ही बूढ़े ने सोचा कि उसका लड़का ही आ रहा था। "बेटा, तुम्हें पानी लाने गये बहुत देरी हो गई। आओ। मुझे जल्दी पानी दो।"

"मैं आपका लड़का नहीं हूँ। दशरथ हूँ। क्षत्रिय हूँ।" हिचकते हिचकते दशरथ ने अपने दुष्कृत्य के बारे में उनसे कहा।

उनके दुःख की सीमा न रही। दशरथ की सहायता से वे अपने लड़के के शव के पास गये। उस पर गिरकर वे बिलख बिलख कर रोने लगे।

बूढ़े मुनि ने कहा—"तुमने हमारे इकलौते लड़के की निष्कारण हत्या करके हमें व्यर्थ पुत्र शोक दिया है। इसलिए तुम भी पुत्र शोक में मरोगे। मैं यह तुम्हें शाप देता हूँ।"

फिर वे बूढ़े माँ-बाप अपने पुत्र की चिता में ही जलकर मर गये।

कभी की यह घटना दशरथ को तब स्मरण हो आयी। उसे उसने अब कौशल्या को सुनाया।

कौशल्या से बातें कर रहे थे कि उनकी दृष्टि क्षीण होने लगी। धीमे धीमे श्रवण शक्ति भी क्षीण होने लगी।

राम के लिए चिल्लाते, कैकेयी को कोसते आधी रात के समय उन्होंने प्राण छोड़ दिये।

तब राम को अयोध्या से गये हुए छः दिन हो चुके थे। उस समय अन्तःपुर की सब स्त्रियाँ, कौशल्या और सुमित्रा भी सो रही थीं। सारा नगर सो रहा था।

राजा की मृत्यु का समाचार अगले दिन सवेरे ही अन्तःपुर की स्त्रियों को मिला।

जब अन्तःपुर में रोना धोना होने लगा, तो और लोगों को भी माल्म हो गया। नगर भर में भी शीघ्र यह खबर फैल गई।

जल्दी ही वशिष्ट आदि आये। दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया करने के लिए उनके लड़कों में से कोई भी न था। राम लक्ष्मण वनवास कर रहे थे। भरत और शत्रुघ्न, भरत के मामा केकेय राजा के घर थे। इसलिए दशरथ का शरीर कुछ रसायनों में सुरक्षित रखा गया।

सिद्धार्थ, विजय, जयन्त, अशोक और नन्दन आदि को वशिष्ट ने बुलाकर कहा—"तुम जल्दी घोड़ों पर सवार हो केकेय

राजा के पास जाओ। भरत से कहो कि यहाँ मुख्य काम है और हमने बुलाया है। तुम उससे यह न कहना कि राम बन गया हुआ है या दशरथ मर गये हैं।" उसने भरत के लिए अच्छे वस्त्र, आभरण और कई वस्तुयें भेजीं।

वे अनेक नदियाँ, पर्वत पार करके लम्बी यात्रा के बाद भरत के मामा के देश में पहुँचे। भरत से मिलकर उन्होंने उसको ये भेंट दीं, जो उसके मामा और नाना के लिए भेजी गई थीं, वशिष्ट ने जो कुछ कहा था, उसे उसी प्रकार

सुनाया और तुरत अयोध्या आने के लिए कहा।

भरत वहाँ से विदा लेकर अयोध्या से जो उसके पास आये थे, उनके साथ बहुत-सी सेना लेकर निकल पड़ा।

बाकी लोगों को धीमे धीमे आने दिया गया। भरत और शत्रुघ्न रथ में अयोध्या पहिले पहुँच गये। उन्होंने सात दिन यात्रा की।

जिस दिन दूत अयोध्या से आये थे, उसी दिन रात को भरत ने एक गन्दा सपना देखा।

जब से उसने वह सपना देखा था, वह चिन्तित था। अयोध्या पहुँचते ही फिर उसे वही चिन्ता सताने लगी। क्योंकि नगर में उत्साह और उल्लास न था। लोग भी दुःखी जान पड़ते थे। नगर उजड़ा-सा मालूम होता था।

भरत पहिले अपने पिता के महल में गया। जब वे वहाँ न दिखाई दिये, तो माता के घर गया। लड़के को देखते ही कैकेयी आसन से उतरी। भरत ने उनके पैर छुये। उसे अपने पास बिठाकर उससे कुशल प्रश्न पूछे—"तुम कब मामा के यहाँ से निकले? तुम्हारे मामा और नाना कुशल तो हैं? क्या तुम वहाँ आराम से रहे?"

भरत ने इन प्रश्नों का उत्तर न दिया—"माँ, पिता जी कहाँ हैं? क्या वे बड़ी माँ कौशल्या के यहाँ हैं? मुझे उनके चरणों को प्रणाम करना है!"

"वे पितरों में मिल गये हैं, बेटा," कहकर कैकेयी ने उसको उनकी मृत्यु का समाचार दिया। यह सुनते ही भरत ढेर-सा हो गया। कैकेयी ने उसे आश्वासन देने का प्रयत्न किया।

तैमूर का मकबरा

तैमूर (तैमूर लेन) संसार के महायोद्धाओं में एक है। इसने भारत, फारस, एशिया माइनर के कई प्रान्तों को जीता। इसकी राजधानी समरकन्द थी। १४०५ में जब वह मर गया, तो यहाँ उसका मकबरा बनवाया गया। इस मकबरा का नाम गुर अमीर है। इस पर चीनी मिट्टी से रंग-बिरंगा काम किया गया है।
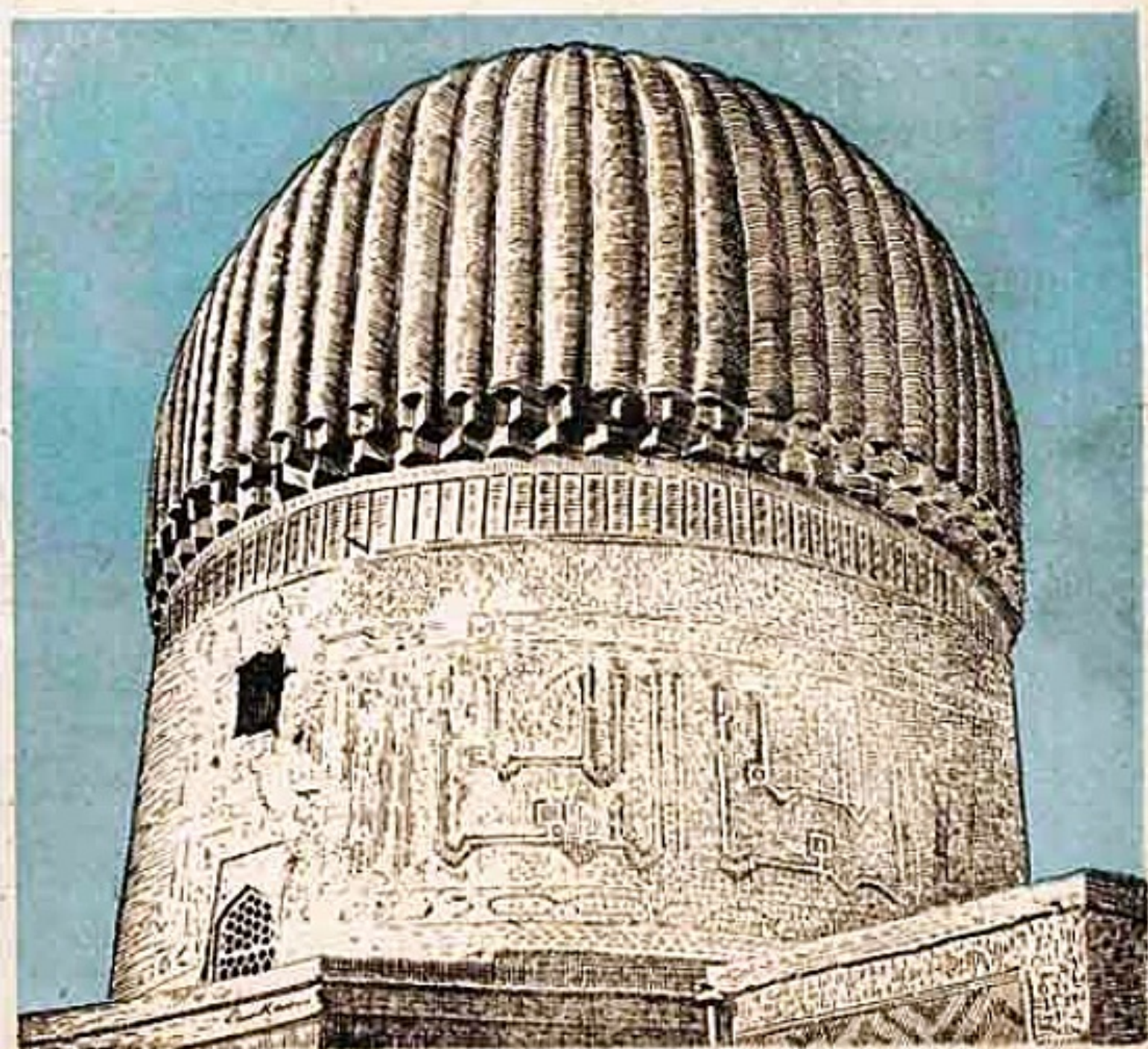
१. तुलसीराम रामदास श्रीवास, हिंगनघाट

क्या आप "चन्दामामा" बड़ी साईज़ में प्रकाशित नहीं कर सकते ?

अभी तो नहीं।

२. विमला रानी, गुरुदासपुर

क्या "चन्दामामा" हिन्दी भाषा में ही अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है या अन्य भाषाओं में भी ?

सभी भाषाओं में लोकप्रिय है, पर क्या लोकप्रियता की भी सीमा हो सकती है ?

३. रामलाल बान्सल, मोगा

अयोध्याकाण्ड पूरा प्रकाशित करेंगे या नहीं ?

करेंगे।

४. राधाश्याम सोनी, जोधपुर

बच्चों की प्रिय पत्रिका "चन्दामामा" में बेताल कथायें और भूतों सम्बन्धी कहानियाँ छापना कहाँ तक उपयुक्त है ?

इन कहानियों से जहाँ मनोरंजन होता है, वहाँ हम सोचते हैं कि बच्चों का भय भी कम होगा...बिना भय को भय के दूर करना कठिन है। भयंकर चीज़ को देखकर पहिले तो भय होता है...फिर भय की मात्रा कम होती जाती है...हम जो कहना चाह रहे हैं, हमें उमीद है, आप समझेंगे।

५. बलवन्त सिंह, हैदराबाद

गोल मटोल भीम की कहानियाँ कब तक चलेंगी ?

जल्दी ही समाप्त होनेवाली हैं।

६. एस. नागराज, वाराणसी

हम मद्रास आयें तो आप हमें चन्दामामा पब्लिकेशन देखने की इज़ाज़त देंगे ?

अवश्य ।

७. उमेशचन्द्र अहूजा, लखनऊ

क्या पाठकों के मतों पर विचार किया जाता है ?

हाँ, अवश्य, हम ही तो उन्हें आमन्त्रित कर रहे हैं ।

८. मुकेश, कानपुर

क्या आप "महाभारत" पहले की भाँति फिर न छापेंगे ?

अब तो हम अन्त के निकट हैं, पुनः प्रकाशन तो नहीं होगा ।

९. सर्वजित सिंह, पथरघाटा

हमने सुना है कि आप "चन्दामामा" को प्रति सप्ताह छापा करेंगे, क्या यह सच है ?

नहीं भाई, कहाँ सुना है ?

१०. राजेन्द्र प्रसाद केशरी, झरिया

"चन्दामामा" में जो धारावाहिक "अग्निद्वीप" प्रकाशित हुआ था, वह मेरे पास पूरी तरह लिखा हुआ है, मैं इसे प्रेस में देना चाहता हूँ, क्या इसकी आज्ञा दे सकते हैं ?

आपने कम से कम आज्ञा तो माँगी, ऐसा करना अपराध है । अनुचित है । न कीजिये ।

११. पी. सोमसुन्दरं, मद्रास

आजकल बच्चों के लिए, बच्चों के साहित्य के लिए सरकार इतना कुछ कर रही है, कितने ही अनुदान दे रही है—क्या "चन्दामामा" को भी कुछ दिया जाता है ?

नहीं तो ।

Photo by Pranlal K. Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

चलती कार हुई खराब,
बच्चे रहे धकेल !

प्रेषक : कुलदीपराज - बम्बई

Photo by A. S. Lakdawala
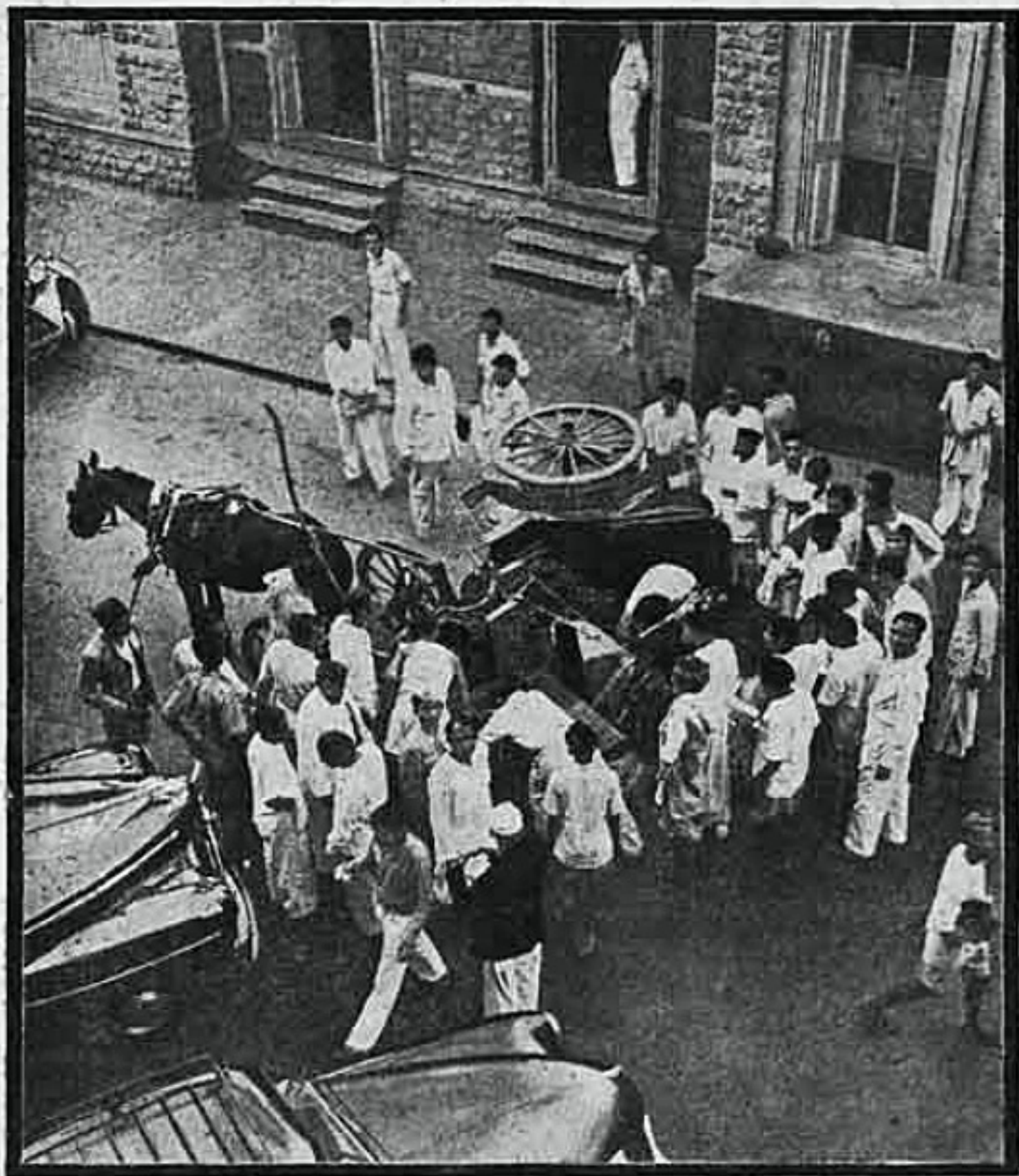
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

उलट गया है टाँगा देखो,
जमा हुआ है मेला !!

प्रेषक :
कुलदीपराज - बम्बई

क्षणिक वैराग्य ★ [रामतीर्थ कथा]

एक दिन कड़ी दुपहरी में एक बूढ़ा लकड़ियों का गट्ठर लेकर आ रहा था।

यूँही बूढ़ा बड़ा कमज़ोर था। फिर बड़ी धूप पड़ रही थी। सिर पर भी भारी गट्ठर था। वह एक पेड़ के नीचे गया। गट्ठर नीचे डालकर—औंधे मुँह पड़ा-पड़ा हाँफ रहा था—"अरे मृत्यु देवता, कम से कम तुम तो आओ।" वह रोया।

तुरत यम उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। यम का मुँह देखते ही बूढ़े का दिल धड़ धड़ करने लगा। उसे डर लगा। उसने अपने समक्ष खड़े व्यक्ति से पूछा—"तुम कौन हो?"

"तुमने मुझे बुलाया है न? इसलिए ही आया हूँ। मैं मृत्यु देवता हूँ। अगर तुम मरना चाहो, तो कहो अभी ले जाता हूँ।" यम ने कहा।

"अरे, मैंने तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया था कि तुम मुझे ले जाओ। यहाँ कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने यह सोचकर बुलाया था कि तुम गट्ठर उठाने में मेरी मदद करोगे।" बूढ़े ने यम से कहा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जुलाई १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ मई १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मई – प्रतियोगिता – फल

मई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **चलती कार हुई खराब, बच्चे रहे धकेल!**

दूसरा फ़ोटो : **उलट गया है टाँगा देखो, जमा हुआ है मेला!!**

प्रेषक : **कुलदीपराज,**

C/o श्री आनन्द स्वरूप अमर सेन्ट्रल सिल्क बोर्ड ९५-B. मेघदूत मरिनड्राइव - बम्बई;- २.

अन्तिम पृष्ठ

जब तक युद्ध होता रहा, सँजय धृतराष्ट्र को युद्ध की खबरें देता रहा। यह सुनते ही कि उसके सौ पुत्र मर गये थे, वह मूर्छित हो गिर पड़ा। सँजय ने उसे उठाकर कहा—"तुम्हारे पुत्र ही क्या मरे हैं! अट्ठारह अक्षौहिणी सेना और संसार के सब योद्धा मारे गये हैं। सबका प्रेत कार्य करना है।"

विदुर ने भी धृतराष्ट्र को दिलासा दिया। यह दिखाने के लिए संसार कैसा था—उसने एक उदाहरण दिया। एक ब्राह्मण घने जंगल में रहा करता था। उसमें भयंकर जन्तु थे। एक राक्षस स्त्री ने उसका पीछा किया। उससे बचने के लिए वह घने जंगल में भागा। भागता भागता वह कुँये में आ गिरा। उस पर बेलें लिपटी हुई थीं, इसलिए वह उसे दिखाई न दी, उन बेलों पर उसका पैर लगा—वह पूरी तरह गिरा नहीं, सिर के बल लटकने लगा। जब वह उस हालत में था, तो उस पर कुछ और आपत्तियाँ आईं। कुँये के उपरले हिस्से पर उसे एक बड़ा हाथी दिखाई दिया। वहीं एक पेड़ पर शहद का बड़ा छत्ता था और उस पर बड़ी बड़ी मधु मक्खियाँ थीं। छत्ते में से एक एक बून्द करके शहद गिर रहा था। वह ब्राह्मण उन्हें पीने लगा। वह ज्यों ज्यों पीता गया, उसके पीने की इच्छा बढ़ती ही गई, उसे जीवन से विमुखता नहीं हुई।

विदुर ने यह उदाहरण सुनाकर कहा—"राजा, मनुष्य के इहलौकिक इच्छायें भी कुछ ऐसी ही होती हैं।" कहकर उसने तत्व बोध किया। पर इस वेदान्त से भी धृतराष्ट्र का पुत्र शोक कम नहीं हुआ। तब व्यास मुनि ने यों कहा—

"मैं एक बार इन्द्र सभा में गया। तब भूदेवी ने आकर देवताओं से प्रार्थना की कि उसका भार कम कर दिया जाय। तब विष्णु ने उससे कहा कि तुम्हारे दुर्योधन पैदा होगा। वह तुम्हारा भार कम कर सकेगा। यह सोच कि पाण्डवों ने तुम्हारे प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया है, उनसे बदला न लेना। पाण्डव तुम्हें बहुत चाहते हैं।"

इन बातों को सुनकर धृतराष्ट्र को कुछ धीरज हुआ। गान्धारी और कुन्ती और अन्य अन्तःपुर की स्त्रियों को लेकर युद्ध भूमि की ओर चला।

रास्ते में धृतराष्ट्र को कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा मिले। उन्होंने गान्धारी और धृतराष्ट्र से कहा कि वे ही मरने से बच गये थे। पिछली रात को द्रुपद के पुत्रों को, द्रौपदी की सन्तान को मार दिया था और अब वे पाण्डव कहीं न पकड़ ले, इसलिए भागे जा रहे थे। उन्होंने उनसे विदा ली। फिर वे अलग अलग रास्ते पर चले गये। कृपा हस्तिनापुर गया। कृतवर्मा अपने भोज देश भाग गया, अश्वत्थामा व्यास के आश्रम में गया। वह वहाँ पाण्डवों को मिल गया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'